बिहार सरकार
कृषि विभाग

मासिक पत्रिका

खेती बारी

जुलाई, 2024 वर्ष–06 अंक–03

माननीय मुख्यमंत्री ने किया खरीफ महा-अभियान का शुभारंभ

बिहार सरकार
उद्यान निदेशालय, कृषि विभाग

नारियल पौधा वितरण कार्यक्रम (2024-25)

नारियल पौधा वितरण		
क्र० सं०	प्रति पौधा इकाई लागत	सहायतानुदान
1	85 रू०	लागत मूल्य 85 रू० का 75%(63.75 रू०)

यह योजना राज्य के सभी 38 जिलों में कार्यान्वित की जाएगी।

आवश्यक जानकारी

- नारियल पौधा, नारियल विकास बोर्ड के माध्यम से प्राप्त कर कृषकों को सहायक निदेशक उद्यान द्वारा उपलब्ध कराया जाएगा।
- पौधा प्राप्ति के पूर्व प्रति पौधा कृषक अंश 21.25 ₹ की दर से सहायक निदेशक उद्यान के यहाँ जमा करना होगा।
- कृषक को न्यूनतम 5 तथा अधिकतम 712 पौधा (प्रति हेक्टेयर 178 पौधा) अनुदानित दर पर उपलब्ध कराया जायेगा।

योजना का लाभ लेने के लिए विभागीय साईट :
https://horticulture.bihar.gov.in
पर उपलब्ध "फल से सम्बंधित योजना " के अंतर्गत "नारियल पौधा वितरण योजना (राज्य योजना)" के "आवेदन करें" लिंक पर जायें एवं जरूरी विवरणियों की प्रविष्टि करते हुए आवेदन कर सकते हैं।

निदेशक उद्यान-सह-मिशन निदेशक राज्य बागवानी मिशन, बिहार, पटना।

PR No.- 001708 (Agriculture)D. 2024-25

मासिक
खेती बारी
वर्ष–6 अंक–2

मुख्य संरक्षक

श्री मंगल पाण्डे
माननीय कृषि मंत्री, बिहार सरकार
मार्गदर्शन

श्री संजय कुमार अग्रवाल (भा.प्र.से.)
सचिव, कृषि विभाग, बिहार सरकार

श्री मुकेश कुमार लाल (आई.ए.ए.एस.)
निदेशक, कृषि, बिहार

संपादक
श्री धनन्जय पति त्रिपाठी
निदेशक, बामेती, बिहार

संपादक मंडल (वर्तमान संस्करण)
श्री सुदामा महतो
निदेशक, भूमि संरक्षण, बिहार, पटना

श्री संतोष कुमार उत्तम
प्रमंडलीय संयुक्त निदेशक, (शस्य)
बिहार, पटना

डॉ. प्रमोद कुमार
संयुक्त निदेशक (पौधा संरक्षण),
मुख्यालय, पटना

डॉ. रणधीर कुमार
प्राचार्य, नालंदा उद्यान महाविद्यालय
नूरसराय, बिहार

डॉ. एम. डी ओझा
क्षेत्रीय निदेशक, कृषि अनुसंधान संस्थान, पटना

डॉ. राजेश कुमार
उप–निदेशक (सूचना), पटना, बिहार

डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा
स्टेट कॉडिनेटर आत्मा योजना, पटना बिहार

श्रीमति शारदा शर्मा
उप निदेशक (कृषि), बामेती

नीलम गौर
उप निदेशक (मॉस कम्यूनिकेशन), बामेती

प्रकाशक
बिहार कृषि प्रबंधन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान (बामेती)
पोस्टः बिहार वेटनरी कॉलेज, जगदेव पथ, पटना–800 014
website: www.bameti.org, eAmail : bameti.bihar@gmail.com

इस पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार तथ्य/आकड़ा के लिए लेखक उत्तरदायी है। इससे प्रकाशक/संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। –**संपादक**

संपादकीय

कृषि का विकास और संरचनात्मक परिवर्तन

बिहार की अर्थव्यवस्था में कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका है। कृषि राज्य की आय में एक चौथाई से अधिक का योगदान प्रदान करती है एवं ग्रामीण स्तर पर लगभग 70 प्रतिशत लोगों के रोजगार का साधन है। कृषि राज्य के आर्थिक और सामाजिक विकास में एक अहम भूमिका अदा करती है। राज्य सरकार ने खाद्यान फसल, उद्यानिक और पशुधन क्षेत्रों में उत्पादकता वृद्धि में सुधार के लिए एक नयी पहल की हैं। चतुर्थ कृषि रोडमैप के विभिन्न चरणों के तहत सिंचाई का विकास, इनपुट आपूर्ति का विस्तार के कार्यक्रमों को एक नयी मजबूती मिलेगी वहीं बाजार सुधार और कृषि मशीनीकरण के माध्यम से कृषि क्षेत्र में विकास के नये आयाम भी स्थापित होंगे। कृषि रोडमैप के माध्यम से उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि से किसानों की आय में सुधार होगा तथा आर्थिक उन्नती से किसानों का सार्वांगीक विकास किया जाना है। बिहार में फसल उत्पादन में वृद्धि हेतु राज्य योजना के तहत कृषि यांत्रीकरण योजना से बिहार का के किसानों को वितीय वर्ष 2024 में 119 करोड़ रुपये का अनुदान दिया जायेगा। बागवानी, सिंचाई, जुताई, बुआई, निराई और कटाई के लिए उपयोग किए जाने वाले कुल 108 प्रकार के कृषि उपकरण इस प्रणाली के तहत अनुदान के पात्र होंगे।

इस वर्ष राज्य में खरीफ मौसम में धान की खेती का लक्ष्य 36.54 लाख हेक्टेयर रखा गया है। मुख्यमंत्री तीव्र बीज विस्तार योजना अंतर्गत 5069.52 क्विंटल धान के बीज किसानों को 90 प्रतिशत अनुदान दर पर उपलब्ध करायी जा रही है। मक्का की खेती को बढ़ावा देने के लिए 2.93 लाख हेक्टेयर का क्षेत्र विस्तार किया जायेगा एवं दलहन उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए अरहर 0.56 लाख हेक्टेयर, मूंग का 0.17 लाख हेक्टेयर की योजना राज्य सरकार द्वारा बनायी गई है। मोटे अनाज में बाजरा की खेती को बढ़ावा देने हेतु 0.15 लाख हेक्टेयर, ज्वार का 0.16 लाख हेक्टेयर, मडुआ 0.29 लाख हेक्टेयर तथा अन्य दलहन का 0.11 लाख हेक्टेयर क्षेत्र का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। बिहार में आम उद्यानिक फलों में एक विशिष्ठ स्थान रखता है। आम के विकास एवं इसकी गुणवत्ता को बढ़ावा देने हेतु कृषि विभाग की ओर से आम महोत्सव का आयोजन पहली बार राजभवन में किया गया। फसलों के उत्पादन एवं उत्पादकता को बढ़ाने के लिए सभी जिलों के प्रखंडों, पंचायतों एवं गांवों में किसान पाठशाला का आयोजन किया जा रहा है। किसान पाठशाला के माध्यम से कृषिकों को प्रशिक्षण द्वारा वैज्ञानिक तरीके से खेती, फसलों के रख–रखाव एवं अन्य तकनीकों की जानकारी कृषि वैज्ञानिकों एवं वरीय पदाधिकारियों के द्वारा विभिन्न सत्रों में दिया जायेगा।

श्री धनन्जय पति त्रिपाठी

विषय सूची

01.	माननीय मुख्यमंत्री ने किया खरीफ महाभियान–2024 का शुभारंभ	05
02.	आम की पैकेजिंग एवं ब्रांडिंग की होनी चाहिए सटीक योजनाः राज्यपाल	06
03.	माननीय मुख्यमंत्री ने किया आम महोत्सव का अवलोकन	07
04.	राज्य की कृषि अर्थव्यवस्था में बागवानी की खास भूमिका	08
05.	मिलेट्स महोत्सव का राज्यपाल ने किया उद्घाटन	09
06.	मिट्टी जांच के लिए नमूनों के संग्रहण का लक्ष्य निर्धारित : कृषि मंत्री	10
07.	धान फसल में खरपतवार प्रबंधन	12
08.	मक्का व पोषक अनाज की खेती को मिलेगा बढ़ावा	14
09.	उत्पादन व अच्छी कमाई के लिए मोटे अनाज की खेती	15
10.	खरीफ 2024 के विभिन्न योजना अंतर्गत घटकवार फसलवार अनुदान दर	17
11.	कृषि क्लिनिक योजना	18
12.	मछली पालन को बनाया रोजगार रिपुसूदन	20
13.	शुष्क बागवानी के तहत सरकार दे रही सब्सिडी	21
14.	ड्रैगन फ्रूट्स की खेती पर 40 प्रतिशत की सब्सिडी	22
15.	केला को 35 दिनों तक रख सकते हैं ताजा	23
16.	सिंचाई की कम सुविधा वाले खेतों में लगायें ये फसलें	24
17.	मुख्यमंत्री उद्यमी योजना के तहत–अमर बने उद्यमी	26
18.	मूंगफली की खेती में उत्पादन से मुनाफा	27
19.	किसान चौपाल कार्यक्रम का आयोजन	28
20.	मोहगनी के पौधे को बनाएं आमदनी का स्रोत	30
21.	पपीते की खेती से गुरु दयाल कर रहे कमाई	31
22.	घर में मछली पालन करने के लिए सरकार देगी सब्सिडी	32
23.	पशुओं के पेट में भी होते हैं कीड़े लक्षण और बचाव के उपाय	33
24.	रितेश गन्ने की खोई से कप का कर रहा कारोबार	34
25.	सोयाबीन की खेती से किसान को अच्छा मुनाफा	35
26.	कृषि के विस्तार में सोशल मीडिया की भूमिका	36
27.	जलवायु परिवर्तन को दूर करने में कार्बन फार्मिंग की भूमिका	38
28.	लाल भिंडी की खेती होती है अधिक कमाई	40
29.	केले की खेती	41

माननीय मुख्यमंत्री ने किया खरीफ महाभियान–2024 का शुभारंभ

खेती बारी डेस्क

माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी के द्वारा 01 अणे मार्ग, पटना से खरीफ महाभियान–2024 का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर उन्होंने सभी जिलों के लिए किसान जागरूकता वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को कृषि विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं की जानकारी देकर उन्हें जागरूक कर योजनाओं से लाभान्वित करना है। किसान जागरूकता वाहन के माध्यम से किसानों को खरीफ मौसम में उगाई जाने वाली फसलों की तकनीकी जानकारी के साथ विभाग द्वारा संचालित कृषक हितकारी योजनाओं की जानकारी

दी जायेगी। वाहन के माध्यम से खरीफ में अनुदानित दर पर उपादान वितरण, फसल अवशेष प्रबंधन, जलवायु के अनुकूल कृषि कार्यक्रम, जैविक खेती प्रोत्साहन, फसल विविधिकरण के साथ चतुर्थ कृषि रोड मैप के महत्वपूर्ण आयामों की जानकारी देकर किसानों को जागरूक करते हुए उनके बीच इसका व्यापक प्रचार–प्रसार किया जा रहा है। कृषि विभाग के सचिव श्री संजय कुमार अग्रवाल द्वारा माननीय मुख्यमंत्री को हरित पौधा एवं पुष्पगुच्छ भेंटकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर माननीय उप मुख्यमंत्री श्री सम्राट चौधरी, उप मुख्यमंत्री श्री विजय कुमार सिन्हा, कृषि मंत्री श्री मंगल पाण्डे, जल संसाधन मंत्री श्री विजय कुमार चौधरी, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री दीपक कुमार, मुख्य सचिव श्री ब्रजेश मेहरोत्रा, विकास आयुक्त श्री चैतन्य प्रसाद, कृषि विभाग के सचिव श्री संजय कुमार अग्रवाल, मुख्यमंत्री के सचिव श्री अनुपम कुमार, मुख्यमंत्री के विशेष कार्य पदाधिकारी श्री गोपाल सिंह, कृषि निदेशक श्री मुकेश कुमार लाल सहित अन्य वरीय पदाधिकारी उपस्थित थे।

आम की पैकेजिंग एवं ब्रांडिंग की होनी चाहिए सटीक योजना: राज्यपाल

खेती बारी डेस्क

राजभवन में आयोजित दो दिवसीय बिहार आमोत्सव 2024 का उद्घाटन माननीय राज्यपाल श्री राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने किया। उन्होंने कहा कि राज्य में आम उत्पादन की असीम संभावनाएं हैं। इसके लिए पैकेजिंग, ब्रांडिंग, मार्केटिंग एवं प्रोसेसिंग की उचित व्यवस्था हो, इसपर सटीक योजना के साथ काम हो, प्रसंस्करण इकाई की भी स्थापना होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि बिहार में 300 से भी अधिक किस्मों के आम उत्पादित होते हैं। बिहार के जर्दालु आम की विशिष्ट पहचान है। बिहार में कृषि आधारित पर्यावरण के अनुकूल उद्योगों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। राज्यपाल ने 'आमोत्सव–2024 पर आधारित स्मारिका कम्पेंडियम ऑफ मैंगो वेराइटल वेल्थ ऑफ बिहार, राजभवन उद्यान : एक झलक, बिहार की आम किस्म की संपदा का सार–संग्रह, एवं जर्दालु आम विषय पर बनी लघु वृत्तचित्र का विमोचन तथा मैंगो पोर्टल' का उद्घाटन किया। उन्होंने काला नमक चावल मैन के नाम से प्रसिद्ध पद्मश्री से सम्मानित किसान डॉ आरसी चौधरी, किसान चाची के नाम से मशहूर पद्मश्री श्रीमति राजकुमारी देवी एवं बिहार के मैंगो मैन के नाम से प्रसिद्ध श्री अशोक चौधरी को सम्मानित किया। इस अवसर पर माननीय उपमुख्यमंत्री बिहार, श्री विजय कुमार सिन्हा, माननीय कृषि मंत्री श्री मंगल पांडे, माननीय मंत्री पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन, डॉ प्रेम कुमार, माननीय मंत्री ग्रामीण विकास, श्री श्रवण कुमार सहित बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर के कुलपति एवं विभागीय पदाधिकारीगण उपस्थित थे। राजभवन परिसर में राज्यपाल द्वारा गोवा से लाये गये आम के पौधे का रोपण किया गया।

आमोत्सव में लगाए गये 40 से अधिक स्टॉल

आमोत्सव में 40 से अधिक स्टॉल लगाए गए। स्टॉल में आम की विभिन्न प्रजाति के साथ इसके प्रसंस्कृत उत्पाद जूस एवं अचार को प्रदर्शित किया गया। आमोत्सव में डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, कृषि विज्ञान केंद्र, बिहार कृषि विश्वविद्यालय सबौर, सीडैक आदि द्वारा स्टॉल लगाया गया। सबौर

चावल मैन डॉ आरसी चौधरी, किसान चाची राजकुमारी देवी और मैंगो मैन अशोक चौधरी किये गये सम्मानित

विश्वविद्यालय ने 50, राजभवन ने 18 व पूसा विश्वविद्यालय ने भी 50 से अधिक प्रजाति के आमों की प्रदर्शनी लगाई।

125 रूपये किलो बिके भागलपुर के जर्दालु आम

एग्रो प्वाइंट कृषक प्रोड्यूसर के स्टॉल पर 500 रुपये प्रति चार किलो पैकेट जर्दालु व 500 रुपये प्रति पांच किलो पैकेट दुधिया मालदह आम की बिक्री की गई। इसके अध्यक्ष राकेश कुमार सिंह ने बताया कि इस साल संगठन की ओर से 70 किलो आम भागलपुर से देश–विदेश में निर्यात किया गया है। बिहार के भागलपुरी आम को दुबई में दो बार भेजा गया इससे बिहार को एक नयी पहचान मिली है।

एक लीटर पल्प से बनेगा चार लीटर जूस

सुमन वाटिका फुड प्रोडक्ट्स के नीलेश रंजन ने बताया कि उनके स्टॉल पर उपलब्ध मैंगो ड्रिंक से दो से तीन वेराइटी को मिलाकर इसके पल्प से तैयार किया जाता है, 250 मि.ली. का आम जूस बोतल 20 रुपये में बेच रहे हैं। उन्होंने बताया कि देसी तरीके से बने जूस आम आदमी घर पर भी बना सकते हैं। पल्प से एक लीटर की स्कॉस बोतल तैयार की गयी है। इसके दाम 130 रुपये हैं। इसमें तीन लीटर पानी मिलाकर मंगों ड्रिंक बनाया जा सकता है।

माननीय मुख्यमंत्री ने किया आम महोत्सव का अवलोकन

प्रदर्शनी में राज्य के विभिन्न जिलों के आम उत्पादकों एवं उद्यमियों द्वारा आम एवं इसके प्रसृंस्त उत्पाद के प्रदर्शों का प्रदर्शन किया जा रहा है। प्रदर्शनी में राज्य के लगभग 500 कृषकों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया जो स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को दर्शाता है।

माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार द्वारा सम्राट अशोक कन्वेंशन केन्द्र स्थित ज्ञान भवन में दो दिवसीय राज्य स्तरीय आम महोत्सव–2024 का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर कृषि मंत्री मंगल पांडेय भी मौजूद थे। माननीय कृषि मंत्री द्वारा माननीय मुख्यमंत्री जी को आम उत्पादकों द्वारा लगायी गयी विभिन्न प्रजातियों के आमों की प्रदर्शनी का अवलोकन कराया गया। इस अवसर पर मा. मुख्यमंत्री ने विभिन्न कृषि उत्पादक समूहों एवं खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों को अनुदान राशि का सांकेतिक चेक भी प्रदान किया। उद्घाटन के बाद उपस्थित किसानों से माननीय कृषि मंत्री श्री मंगल पांडेय ने कहा कि आम उत्पादन के क्षेत्र में बिहार पूर्व से ही प्रसिद्ध रहा है। हमारा लक्ष्य है कि आम के अच्छे प्रभेदों के उत्पादन बढ़े इसके लिए कार्य करने की आवश्यकता है। राज्य में विगत कई वर्षों से बगीचों की कमी देखी जा रही है जिसके परिणामस्वरूप वातावरण पर प्रतिकूल प्रभाव दिख रहा है। यदि राज्य में तापमान व जलवायु उचित रखना है तो हमें बागवानी को बढ़ावा देना होगा। राज्य में अभी हरित भूमि लगभग 15 प्रतिशत है, सरकार का लक्ष्य इसे बढ़ाकर 18 प्रतिशत करना है। इस लक्ष्य की प्राप्ति तब होगी जब हम विभिन्न प्रकार के फलों की बागवानी को और विकसित करेंगे जिससे तापमान पर भी अनुकूल असर पड़ेगा। प्रदर्शनी में राज्य के विभिन्न जिलों के आम उत्पादकों एवं उद्यमियों द्वारा आम एवं इसके प्रसंस्कृत उत्पादों का प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शनी में राज्य के लगभग 500 कृषकों ने भाग लिया। उन्होंने कहा कि राज्य में हो रहे फलों के उत्पादन का निर्यात अन्य देशों में हो, इसके लिए विभाग प्रयत्नशील है। भारत सरकार के वाणिज्य विभाग के अधिकारी द्वारा बताया गया कि बिहार के आम एवं अन्य फलों के निर्यात हेतु क्षेत्रीय कार्यालय खोलने की आवश्यकता है। आम पोषण सुरक्षा, पारिवारिक आमदनी के श्रोत के साथ व्यापार का एक प्रमुख उत्पाद है। आमोत्सव समारोह में जल संसाधन मंत्री श्री विजय कुमार चौधरी, परिवहन मंत्री श्रीमति शीला कुमारी, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री दीपक कुमार, मुख्य सचिव श्री ब्रजेश मेहरोत्रा, विकास आयुक्त श्री चैतन्य प्रसाद, कृषि सचिव श्री संजय कुमार अग्रवाल, मुख्यमंत्री के सचिव श्री अनुपम कुमार, पटना प्रमंडल के आयुक्त श्री कुमार रवि, कृषि मंत्री के आप्त सचिव श्री अमिताभ समेत अन्य वरीय अधिकारी उपस्थित थे।

कृषि मंत्री ने बताया कि दो दिनों में आम के प्रति आमजनों में जो चर्चा हुई है उसका सकारात्मक परिणाम आम की खेती से लेकर उसके विपणन तक में मदद करेगा। कल राज्य से 500 किलो आम न्यूजीलैण्ड निर्यात किया गया है। किसानों को आर्थिक लाभ मिलने से आम के उत्पादन में मदद मिलेगा। दो दिनों के इस आम महोत्सव में 29.00 लाख रूपये से अधिक के आम, आम के पौध रोपण सामग्री तथा आम के उत्पाद की बिक्री हुई है। उन्होंने कहा कि आम के उत्पादन को क्लस्टर में बढ़ावा देने के लिए विशेष कार्य योजना एवं सुविधाएं किसानों के लिए विशेष योजना के माध्यम से विभाग लेकर आएगा।

राज्य की कृषि अर्थव्यवस्था में बागवानी की खास भूमिका

बिहार के कृषि अर्थव्यवस्था में बागवानी की भूमिका अहम् है। राज्य के प्रमुख फल आम, लीची एवं केला बागवानी क्षेत्र को मजबूती प्रदान करते हैं। आम फल का हमारे जीवनशैली एवं संस्कृति से गहरा संबंध रहा है। आम फल आम लोगों के पोषण सुरक्षा, पारिवारिक आमदनी के स्रोत के साथ व्यापार का एक प्रमुख व्यापारीक कृषि उत्पाद है। बिहार के कृषि विभाग के सचिव श्री संजय कुमार अग्रवाल ने बताया कि दिनांक 22–23, जून, 2024 को पटना के ज्ञान भवन में राज्यस्तरीय आम महोत्सव, 2024 का आयोजन किया जा रहा है। कृषि मंत्री श्री मंगल पाण्डे की उपस्थिति में मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार अपने कर–कमलों से आम महोत्सव का उद्घाटन किया गया। सचिव ने बताया कि महोत्सव को आकर्षक, ज्ञानवर्द्धक एवं मनोरंजक बनाने का हरसंभव प्रयास किया गया है।

1. राज्य के आम की विविधता के प्रदर्शन के लिए आम महोत्सव सैंकड़ों रंग–बिरंगे आम के साथ सज चुकी है। सचिव, कृषि ने बताया कि प्रदर्शनी में राज्य के विभिन्न जिलों के आम उत्पादकों एवं उद्यमियों द्वारा आम एवं इसके प्रसंस्कृत उत्पाद के प्रदर्शों का प्रदर्शन किया जा रहा है। प्रदर्शनी में आम के अगात किस्मों, मध्यकालीन किस्मों, पिछात किस्मों, संकर किस्मों, रंगीन किस्मों, बीजू आम आदि के 4578 प्रदर्शों को प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शनी में राज्य के कृषकों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया, जो एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को दर्शाता है।

   अगात किस्में में जर्दालू, मिठुआ, गुलाब खास, सुर्ख वर्मा, सुन्दर प्रसाद, जरदा, बम्बई, रानी पसंद, गोपालभोग आदि के 1357 प्रदर्श प्रदर्शित किये गये।

   मध्यकालीन किस्में में लंगड़ा (मालदा), हिमसागर, अमन इब्राहिमपुर, कृष्णभोग, अलफांसो, दशहरी, हुस्न–ए–आरा, खासुलखास, बेनजीर, आबेहयात आदि के 1367 प्रदर्श प्रदर्शित किये गये।

   पिछात किस्मों में फजली, सुकूल, सीपिया, समरबहिस्त, चौसा, तैमूरिया, की 667 प्रदर्शों को प्रदर्शित किया गया।

   संकर किस्म में महमूद बहार, प्रभाशंकर, मल्लिका, आम्रपाली आदि के 586 प्रदर्शों

   को प्रदर्शित किया गया है।

   बिहार राज्य में आम की प्रमुख किस्मों के साथ कुछ खास क्षेत्रों में आम के कुछ खास किस्म का उत्पादन होता है, जहाँ की मिट्टी एवं जलवायु आम के फल को एक विशेष पहचान दिलाती है।

2. भागलपुर के जर्दालू आम को जीआई टैग प्राप्त है – बिहार में उत्पादित आम की विभिन्न प्रजातियों में भागलपुर के जर्दालू को भारत सरकार द्वारा वर्ष 2018 में जीआई टैग प्रदान किया गया, जो इस प्रभेद के लिए हमारी भौगोलिक अनुकूलन परिस्थितियों को दर्शाता है।
3. ज्ञान के साथ स्वाद का मजा : स्कूल एवं कॉलेज के बच्चे राज्य में उत्पादित आम के विभिन्न किस्मों से रूबरू हुए। इन लोगों ने आम खाओ प्रतियोगिता में आम का स्वाद भी चखा।
4. **आम को खास बनाने की पहल** :– सचिव, कृषि ने बताया कि राज्य में 1.63 लाख हेक्टेयर में आम की बागवानी है एवं 15.76 लाख टन का उत्पादन होता है। आम की तुड़ाई की अवधि 4–5 महीने होती है। कम अवधि में अधिक उत्पादन होने के कारण बड़ी मात्रा में उत्पाद सड़ जाते हैं। फलतः उत्पादकों को राजस्व की क्षति होती है।

   राज्य सरकार के द्वारा महोत्सव में कई बड़े निर्यातकों, प्रसंस्करणकर्ता, उद्यमियों को बुलाया गया, जिन्होंने सीधे उत्पादक किसान/किसान समूहों से संवाद किया एवं बिहार के आम को दूरस्थ एवं अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में पहुँचाने एवं प्रसंस्करण व्यवस्था पर विचार–विमर्श किया।
5. **आम के बेहतर गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिए तकनीकी सत्र** :– महोत्सव के दौरान तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें राज्य के कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों ने कृषकों को आम के बेहतर उत्पादन की तकनीक का ज्ञान दिया एवं कृषकों की समस्या का समाधान किया।
6. **बच्चों के लिए महोत्सव में खास** : बच्चों के मनोरंजन के लिए AR/VR एवं अन्य खेल, आम फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता, आम खाओ इनाम पाओ प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया।
7. प्रदर्शनी में बिक्री हेतु कच्चा/पका आम, आम के कलमी पौधे, आम का अँचार, आम की कुल्फी अन्य स्वादिष्ट एवं अनूठे आम के उत्पाद उपलब्ध थे।
8. **अच्छे प्रदर्शन करने वाले कृषकों को पुरस्कार** – प्रतियोगिता के नौ वर्गों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कृषकों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के रूप में क्रमशः 5,000 रूपये, 4,000 रूपये एवं 3,000 रूपये के साथ प्रशस्ति–पत्र प्रदान किया गया। इसके साथ ही राज्य के एक किसान को सभी वर्गों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने पर 10,000 रूपये के विशिष्ट पुरस्कार एवं आम शिरोमणि की उपाधि प्रदान की गयी।

सचिव, कृषि, बिहार ने बताया कि राज्य में बागवानी फसलों के विकास हेतु राज्य सरकार के द्वारा कई योजनाएँ संचालित की जा रही है, जिसमें राष्ट्रीय बागवानी मिशन, फल विकास योजना, क्लस्टर में फलों की खेती आदि योजना के चयन में राज्य के क्षेत्रों की विविधता का ध्यान रखा गया है। क्लस्टर में फलों की खेती हेतु राज्य सरकार के द्वारा 1 से 2 लाख रूपये प्रति एकड़ सहायतानुदान का प्रावधान किया जा रहा है, ताकि राज्य में विभिन्न फलों के उत्पादन को बढ़ाया जा सके एवं इसके बाजार की समुचित व्यवस्था किया जा सके। राज्य सरकार के द्वारा प्रसंस्करण इकाई, कोल्ड चेन विकास आदि हेतु सहायतानुदान प्रदान की जा रही है, ताकि कृषकों के उत्पाद को बेहतर मूल्य प्राप्त हो सके। सचिव, कृषि ने बताया कि वित्तीय वर्ष 2021 में जर्दालू आम को लंदन, दुबई, बहरीन भेजा गया। अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में बिहार के आमों की किस्मों को खास पसन्द किया जाता है।

मिलेट्स महोत्सव का राज्यपाल ने किया उद्घाटन

पटना के रवींद्र भवन में दिनांक 16 जून से 18 जून तक बिहार मिलेट्स महोत्सव का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन राज्यपाल श्री राजेंद्र विश्वनाथ अर्लेकर ने किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि हम अपनी पुरातन परंपराओं को छोड़कर पाश्चात्य संस्कृति की ओर अभिमुख हो गये हैं, इस कारण हमें जीवनशैली से संबंधित डायबिटीज जैसे रोग हो रहे हैं। यदि हमें अपने शरीर को स्वस्थ रखना है तो हमें मिलेट्स को अपनाना होगा। आहार ही हमारी औषधि होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि उम्मीद है कि इस महोत्सव के बाद लोग मिलेट्स अपनाने के लिए प्रेरित होंगे। इस दौरान बिहार सरकार के कृषि मंत्री श्री मंगल पांडे, कृषि विभाग के सचिव श्री संजय कुमार अग्रवाल, नाबार्ड के मुख्य महाप्रबंधक श्री सुनील कुमार, एसीएफएल के निदेशक श्री एपी वर्मा, आद्या ऑर्गेनिक की निदेशक श्रीमति रत्ना सिन्हा आदि ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। कृषि विभाग, एसआइएस ग्रुप, एसीएफ एल माइक्रो फाइनेंस, आद्या ऑर्गेनिक, इंडियन पब्लिक स्कूल, देहरादून और संगत द् पंगत की सहभागिता रही। मौके पर बुद्धिमान मिश्र लिखित मनीषा श्रीवास्तव के गाये मिलेट्स गीत को रिलीज किया गया।

मिलेट्स किसानों को हर संभव मददः कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बिहार सरकार के कृषि एवं स्वास्थ्य मंत्री श्री मंगल पांडे ने कहा कि किसान और आम नागरिक मोटे अनाज से दूर हो गये। हमलोग गेहूं–चावल को ही अपना प्रमुख आहार मान लिए हैं। इन अनाजों को खाने से कई समस्याएं हो रही हैं। उन्होंने कहा कि गेहूं–चावल खाने से आ रही समस्याओं का हल ढूंढ़ने के लिए समाज फिर से अपनी भूली हुई विरासत श्रीअन्न (मिलेट्स) पर सोचने लगा है। इसके उत्पादन से किसानों की आमदनी बढ़ेगी। इससे जलवायु परिवर्तन की समस्या से भी निपट सकते हैं। सुखाड़ और कम सिंचाई के पानी की समस्या से किसानों को मुक्ति मिल सकती है। कहा कि पारंपरिक खेती से आगे निकलना होगा।

बिहार के राज्यपाल श्री राजेंद्र विश्वनाथ अर्लेकर ने कहा कि हमने अपनी परंपरा छोड़ दी है। इस कारण हमें डायबिटीज हो रही है। इस कारण हमें मिलेट्स अपनाना होगा। आहार ही हमारी औषधि होनी चाहिए। श्री अन्न (मिलेट) को अपनाना होगा।

मिलेट्स फायदे का सौदा : राज्यसभा के पूर्व सांसद और अवसर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री आरके सिन्हा ने कहा कि अगर आहार सही नहीं है तो दुनिया का कोई डॉक्टर आपको ठीक नहीं कर सकता। पहला सुख निरोगी काया है। मिलेट्स की खेती फायदे का सौदा है। कहते हैं कि "बोओ और घर जाकर सोओ"।

तीन माह तक मिलेट्स खाने से दूर होगा शुगर : पद्मश्री से सम्मानित एवं मिलेट् मैन ऑफ इंडिया के नाम से प्रसिद्ध डॉ खादर वली ने कहा कि आधुनिकता के चलते धीरे–धीरे हमारी थाली से मोटे अनाज दूर हो गये हैं। आलम तो यह हो गया है कि हरित क्रांति के समय से कृषि वैज्ञानिक भी मिलेट्स पर शोध नहीं कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि एक किलो चावल उत्पादन करने के लिए 8000 लीटर पानी की जरूरत होती है, जबकि एक किलो मोटे एवं छोटे अनाज के उत्पादन के लिए अधिकतम केवल 800 लीटर पानी की जरूरत होती है। साथ ही तीन महीने तक मिलेट्स खाने पर ब्लड शुगर संतुलित हो जाता है। ज्वार, बाजरा, रागी, सावां, कोदो, कुटकी और कंगनी का सेवन करके शरीर को निरोग रख सकते हैं।

मिट्टी जांच के लिए नमूनों के संग्रहण का लक्ष्य निर्धारित : कृषि मंत्री

सरकार चालू वित्तीय वर्ष में किसानों को बेतहाशा खाद के उपयोग खेतों की बिगड़ रही सेहत के प्रति जागरूक करेगी। कृषि मंत्री श्री मंगल पांडेय ने बताया कि चालू वित्तीय वर्ष में पांच लाख खेतों में मिट्टी जांच के लिए नमूनों के संग्रहण/विश्लेषण का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसमें अब तक 417275 खेतों की मिट्टी जांच नमूनों का संग्रहण किया जा चुका है। मिट्टी जांच कार्यक्रम का उद्देश्य मिट्टी की जांच कर जांच परिणाम के आधार पर संतुलित मात्रा में उर्वरक के उपयोग को प्रोत्साहित करते हुए कृषि योग्य मिट्टी को स्वस्थ रखना, फसल उपज में वृद्धि लाना एवं खेती की लागत को कम करना है। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा कृषि विभाग द्वारा बिहार को मिट्टी जांच में प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। बिहार में 72 ग्रामस्तरीय मिट्टी जांच प्रयोगशाला, 38 जिलास्तरीय मिट्टी जांच प्रयोगशाला, गया, मुंगेर एवं भागलपुर के अनुमंडल में 03 अनुमंडलस्तरीय मिट्टी जांच प्रयोगशाला कार्यरत हैं। इसके अतिरिक्त राज्य में प्रमंडल स्तर पर 09 चलंत मिट्टी जांच प्रयोगशाला कार्य कर रहा है। इसके साथ ही, बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर एवं डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर में भी मिट्टी जांच प्रयोगशाला स्थापित है। कृषि मंत्री श्री मंगल पांडे ने पटना में क्षेत्रीय पदाधिकारियों के साथ मीटिंग की। इस मीटिंग में 72 ग्रामस्तरीय मिट्टी जांच प्रयोगशाला के कर्मी भी शामिल थे जिनके के साथ मिट्टी स्वास्थ्य एवं उर्वरता योजना की समीक्षा की गई। इस साल इस योजना के लिए 15 करोड़ रुपये की मंजूरी फरवरी के महीने में दी जा चुकी है। ऐसे में कोई आर्थिक संकट नहीं होगा।

कृषि मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि प्रमंडल स्तर पर संचालित 9 मोबाइल टेस्टिंग लैब प्रयोगशालाओं के लिए पूरी तरह से रूट चार्ट निर्धारित किया जाए ताकि किसानों को यह पता चल सके कि उनके गांव में कब मोबाइल मिट्टी जांच प्रयोगशाला आएगी। इससे किसानों को अपने खेतों के मिट्टी की जांच कराने में सुविधा होगी। उन्होंने गांव स्तरीय मिट्टी जांच प्रयोगशाला के कर्मियों से समय पर मिट्टी जांच कर पोर्टल पर इसे अपलोड करने की अपील की है।

कृषि मंत्री ने मिट्टी जांच कार्यक्रम में किसानों के बीच बड़े पैमाने पर प्रचार–प्रसार करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि खरीफ किसान चौपाल, दीवार पर लिखकर और आकर्षक होर्डिंग के जरिये किसानों को मिट्टी जांच कराने के लिए जागरूक किया जाये। साथ ही मिट्टी जांच कराने से किसानों को होने वाले फायदों के बारे में भी बताया जाये।

केंद्र सरकार ने विपणन सत्र 2024-25 के लिए ख़रीफ़ फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य

केंद्र सरकार ने 14 खरीफ फसलों की मिनिमम सपोर्ट प्राइस बढ़ा दी है। केंद्रीय कैबिनेट ने यह फैसला लिया। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि धान की नई एमएसपी 2,300 रुपए तय की गई है, जो पिछली एमएसपी से 117 रुपए ज्यादा है।

अरहर दाल की एमएसपी में 400 — की बढ़ोतरी

केंद्रीय कैबिनेट ने मक्का और दालों की मिनिमम सपोर्ट प्राइस में बढ़ोतरी को भी मंजूरी दी है। अरहर दाल की एमएसपी को 550 रुपए प्रति क्विंटल और उड़द दाल की एमएसपी को 450 रुपए प्रति क्विंटल बढ़ाने को मंजूरी दी है। इसके बाद अब अरहर दाल एमएसपी बढ़कर 7550 रुपए प्रति क्विंटल और उड़द दाल की एमएसपी 7400 रुपए प्रति क्विंटल हो गई है। इसके साथ ही मक्का की एमएसपी 135 रुपए प्रति क्विंटल और मूंग की एमएसपी 124 रुपए प्रति क्विंटल बढ़ाई गई है। न्यूनतम समर्थन मूल्य वह मूल्य है जो किसानों को उनकी फसल पर मिलता है। भले ही बाजार में उस फसल की कीमतें कम हो। इसके पीछे तर्क यह है कि बाजार में फसलों की कीमतों में होने वाले उतार–चढ़ाव का असर किसानों पर न पड़े तथा उन्हें न्यूनतम कीमत मिलती रहे। सरकार हर फसल मौसम से पहले एमएसपी यानी कमीशन फॉर एग्रीकल्चर कॉस्ट एंड प्राइजेज की सिफारिश पर एमएसपी तय करती है। यदि किसी फसल की बम्पर पैदावार हुई है तो उसकी बाजार में कीमतें कम होती हैं, तब एमएसपी उनके लिए फिक्स एश्योर्ड प्राइस का काम करती है। यह एक तरह से कीमतें गिरने पर किसानों को बचाने वाली बीमा पॉलिसी की तरह काम करती है।

MSP में 23 फसलें शामिल हैं

7 प्रकार के अनाज (धान, गेहूं, मक्का, बाजरा, ज्वार, रागी और जौ)
5 प्रकार की दालें (चना, अरहर, उड़द, मूंग और मसूर)
7 तिलहन (रेपसीड–सरसों, मूंगफली, सोयाबीन, सूरजमुखी, तिल, कुसुम, निगरसीड)
4 व्यावसायिक फसलें (कपास, गन्ना, खोपरा, कच्चा जूट)

खरीफ की फसलों में कौन–कौन सी फसलें आती हैं?

धान (चावल), मक्का, ज्वार, बाजरा, मूंग, मूंगफली, गन्ना, सोयाबीन, उडद, अरहर, कुरथी, जूट, सन, कपास आदि। खरीफ की फसलें जून जुलाई में बोई जाती हैं। सितंबर–अक्टूबर में इनकी कटाई होती है।

रामतिल की MSP में सबसे ज्यादा इजाफा

फसल	MSP 2024-25	MSP 2023-24	MSP कितनी बढ़ी
धान (सामान्य)	2300	2183	117
धान (A ग्रेड)	2320	2203	117
ज्वार (हाईब्रिड)	3371	3180	191
ज्वार (मालदंडी)	3421	3225	196
बाजरा	2625	2500	125
रागी	4290	3846	444
मक्का	2225	2090	135
तुअर/अरहर	7550	7000	550
मूंग	8682	8558	124
उड़द	7400	6950	450
मूंगफली	6783	6377	406
सूरजमुखी	7280	6760	520
सोयाबीन	4892	4600	292
तिल	9267	8635	632
रामतिल	8717	7734	983
कपास (मिडिल स्टेपल)	7121	6620	501
कपास (लॉन्ग स्टेपल)	7521	7020	501

आंकड़े रुपए प्रति क्विंटल में

धान फसल में खरपतवार प्रबंधन

डॉ. प्रमोद कुमार
संयुक्त निदेशक, पौधा संरक्षण, बिहार

राज्य में धान फसल की रोपनी प्रारंभ हो गयी है। किसान भाइयों धान फसल की अच्छी उत्पादन के लिए जरूरी है कि फसल को खरपतवार से होने वाली क्षति से बचाए। यह क्षति परोक्ष रूप से होती है। ऐसा देखा गया है कि अगर खरपतवार का नियंत्रण नहीं किया जाये तो धान फसल के कुल उत्पादन में होने वाली कुल क्षति का लगभग 33% क्षति खरपतवार से हो सकती है, जो कीट/व्याधि से होने वाली क्षति से कही ज्यादा है। अतः किसान भाईयों को इससे सावधान रहने की आवश्यकता है। खरपतवार हमारे फसल के पौधों से पोषण, स्थान, प्रकाश एवं जल के लिए प्रतिस्पर्धा करते है। आरम्भिक अवस्था में धान फसल के पौधों की वृद्धि दर खरपतवार के पौधों से कम रहने के कारण ये प्रतिस्पर्धा में धान फसल के पौधों से आगे होकर उपज दर में कमी लाते है। धान फसल के पौधों की जिस अवस्था में खरपतवार अधिकतम कुप्रभाव डालते है उसे प्रतिस्पर्धा की चरम अवधि कहा जाता है। यह अवधि धान फसल में बुआई के 15 से 45 दिन तक तथा रोपी गयी फसल में रोपाई के 30 से 45 दिन तक होती है। इस अवधि में धान फसल को खरपतवार मुक्त करना चाहिए यानि प्रबंधन/नियंत्रण रखना चाहिए ताकि उत्पादन प्रभावित नहीं हो।

धान के प्रमुख खरपतवार : धान के प्रमुख खर–पतवार में सावघास, मकरा, कोदों, बनरा, कनकवा, सफेद मुर्गा, भंडारा, बडडी दुग्धी, जंगली धान, दूब तथा मोथा आदि है। जलीय क्षेत्रों में कर्मी तथा जल कुम्भी की अधिकता होती है।

प्रबंधन : सामान्यतः धान फसल में दो निकाई–गुड़ाई की आवश्यकता पड़ती है। पहली निकाई–गुड़ाई, बुआई अथवा रोपनी 20–25 दिन बाद तथा दूसरी 40–45 दिन बाद करके खरपतवारों का प्रभावी नियंत्रण किया जा सकता है। फसल एवं खरपतवार की प्रतिस्पर्धा के क्रान्तिक समय में मजदूरों की कमी या असामान्य मौसम के कारण

(सावाँ)

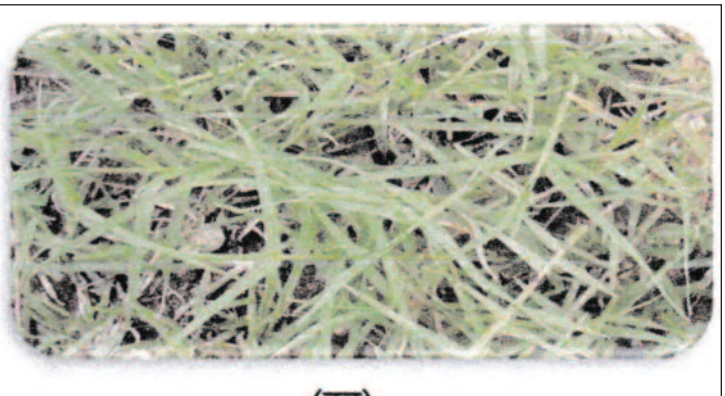

(दूब)

(तीनपतिया)

(मोथा)

कभी–कभी खेत में अधिक नमी हो जाने के फलस्वरूप यांत्रिक विधि से निकाई–गुड़ाई संभव नहीं हो पाता है। जिस कारण किसान भाई खरपतवारनाशी का उपयोग धान में खरपतवार प्रबंधन हेतु करते है।

धान के प्रमुख खरपतवारनाशी-

1. पेंडीमेथिलीन 30% EC– यह खरपतवारनाशी प्री–इमरजेन्स (खरपतवार उगने से पूर्व) प्रकृति का है, इसकी 3.5 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से धान की सीधी बुआई के 3–5 दिनों के अंदर 600–700 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

2. व्यूटाक्लोर 50% EC रोपनी के 2–3 दिनों (72 घंटे) के अंदर 2.5 लीटर 600–700 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए, अथवा 50–60 किलोग्राम सूखे बालू में मिलाकर भुरकाव किया जा सकता है, भुरकाव के समय खेत में हल्का पानी लगा रहना आवश्यक है।

3. प्रेटिलाक्लोर 50% EC रोपनी के 2–3 दिनों के अन्दर 1–1.5 लीटर की मात्रा को 600–700 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

4. ऑक्सीफ्लोरफेन 23.5% EC– 650–1000 मिली० प्रति हे० की दर से छिड़काव किया जा सकता है। जीरोटिलेज या सीडड्रील विधि से सीधी बुआई में उसे 3–5 दिनों के अन्दर व्यवहार करना चाहिए।

5. पाइराजोसल्यूरॉन इथाईल 10% WP– इस खरपतवारनाशी का 100–150 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से रोपनी के 8–10 दिनों के अन्दर 600–700 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव या 50–60 किलोग्राम सूखे बालू में मिलाकर व्यवहार करना चाहिए। जीरोरिलेज या सीडड्रील विधि से धान की सीधी बुआई में 15–20 दिनों के अन्दर इसका व्यवहार किया जाना चाहिए। यदि खेत में पर्याप्त पानी हो तो सूखे बालू में मिलाकर खेत में डाला जा सकता है।

6. विस्पाइरी बैक सोडियम 10% SC यह खरपतवारनाशी पोस्ट इमरजेन्स (खरपतवार उगने के पश्चात) प्रकृति का है। इसका व्यवहार 250 मिली० प्रति हेक्टेयर की दर से बुआई या रोपनी 15–20 दिनों के अन्दर 700–800 लीटर पानी प्रति हेक्टेयर में मिलाकर छिड़काव किया जाना चाहिए।

खरपतवारनाशी रसायनों के प्रयोग में सावधानियाँ-

(क) रसायनों की अनुशंसित मात्रा का ही व्यवहार करें।
(ख) सही समय पर उचित खरपतवारनाशी का व्यवहार करें।
(ग) खरपतवारनाशी रसायनों के घोल को पूरे खेत में समान रूप छिड़काव करें।
(घ) खरपतवारनाशी रसायनों का प्रयोग करते समय भूमि में पर्याप्त नमी होनी चाहिए।
(ङ) छिड़काव सदैव हवा शान्त रहने तथा साफ मौसम में करना चाहिए।
(च) खरपतवारनाशी रसायनों के छिड़काव के लिए फ्लैट फैन/ फ्लड जेट नोजल का ही व्यवहार किया जाना चाहिए।
(छ) छिड़काव करने के पहले एवं छिड़काव के बाद मशीन को अच्छी तरह से पानी से धोकर साफ कर लेना चाहिए, ताकि खरपतवारनाशी का अंश बचा न रह जाये।

विशेष सेवा एवं सुविधा के लिए अपने नजदीक के पौधा संरक्षण केन्द्र या कृषि विज्ञान केन्द्र अथवा सहायक निदेशक, पौधा संरक्षण, सहायक निदेशक, उद्यान या जिला कृषि कार्यालय से सम्पर्क करें।

मक्का व पोषक अनाज की खेती को मिलेगा बढ़ावा

आठ किस्मों के बीज होंगे उपलब्ध

किसानों को 25-25 एकड़ में क्लस्टर बनाकर खेती के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। विभाग की ओर से 4493 कलक्टर में मक्का बीज लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसके अलावा स्वीट कॉर्न, बेबी कॉर्न मक्का की खेती को बढ़ावा देने के प्रयास भी किए जा रहे हैं।

खेतीबारी डेस्क

मॉनसून की बारिश के साथ ही खरीफ फसलों की बुआई का काम शुरू हो जाएगा। खरीफ की प्रमुख फसल धान की खेती के अलावा किसान इस सीजन में मक्का की खेती करके भी काफी अच्छी कमाई कर सकते हैं। खास बात यह है कि मक्का की खेती के लिए राज्य सरकार की ओर से किसानों को सब्सिडी दी जा रही है। योजना के तहत किसानों को मक्का की 8 किस्मों के बीजों पर अनुदान का लाभ प्रदान किया जा रहा है। ऐसे में किसान कम लागत पर मक्का की खेती करके काफी अच्छा लाभ प्राप्त सकते हैं।

मोटे अनाज की खेती को किया जा रहा प्रोत्साहित

राज्य सरकार की ओर से मोटे अनाज की खेती को प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसके तहत ज्वार, कोदो, चीना, रागी, मडुआ के साथ ही मक्का को भी मोटे अनाज की श्रेणी में रखा गया है। मक्के का कई तरह से उपयोग किया जाता है, मक्के की रोटी तो बनाकर खाई ही जाती है, वहीं बरसात में इसके भुट्टे को सेक कर खाया जाता है। इससे पोपकॉर्न बनाया जाता है। इसके दानों का उपयोग सब्जी, सूप, पकौड़े, टिक्की आदि बनाने में किया जाता है। इसके अलावा बिस्कूट, ब्रेड, कुकीज, वेफर्स आदि ब्रेकरी उत्पादों में भी मक्का का उपयोग होता है। पशुओं के आहार में भी मक्का को शामिल किया जाता है। आजकल इसका उपयोग इसके पत्ते से इथेनॉल बनाने में भी किया जाता है। इस तरह मक्का की बाजार मांग अच्छी होने से इसकी खेती किसानों के लिए लाभ का सौदा साबित हो सकती है।

मक्का के बीजों पर मिलेगा अनुदान

मक्का की खेती को बढ़ावा देने के लिए राज्य में किसानों को मक्के के बीज पर 50 से 80 प्रतिशत तक अनुदान दिया जा रहा है। सरकार की ओर से खरीफ अभियान 2024 में मक्का बीज वितरण कार्यक्रम चलाया गया है जिसके अंतर्गत किसानों को 25-25 एकड़ में क्लस्टर बनाकर खेती के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। विभाग की ओर से 4493 कलक्टर में मक्का बीज लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। मक्का के समान्य बीज के अलावा स्वीट कॉर्न, बेबी कॉर्न की खेती को बढ़ावा देने के प्रयास भी किया जा रहा है मक्का की 8 किस्मों के बीजों पर किसानों को अनुदान का लाभ भी दिया जायेगा। मक्का के समान्य बीज के लिए 150 रुपए प्रति किलोग्राम की दर से किसानों को अनुदान उपलब्ध कराया जा रहा है।

मक्का के लिए एमएसपी लागू

राज्य के किसानों को मक्का के बीजों पर सब्सिडी प्रदान करने के साथ ही सरकार मक्का को भी न्यूनतम समर्थन मूल्य यानी एमएसपी के दायरे में लाने पर विचार कर रही है ताकि किसानों को इसका पूरा लाभ मिल सके। ऐसे में किसानों के लिए मक्का की खेती वरदान साबित हो सकती है। अभी फिलहाल मक्के के बीजों पर अनुदान दिया जा रहा है। राज्य के जो किसान मक्का के बीजों पर अनुदान का लाभ प्राप्त करना चाहते हैं, वे इसके लिए आवेदन कर सकते हैं।

साढ़े तीन माह में तैयार हो जाती है-मक्का

मक्का कम अवधि की फसल है। इसकी फसल साढ़े तीन माह तैयार हो जाती है। जिसके फलस्वरूप किसान खरीफ में अन्य फसल की खेती करके लाभ प्राप्त कर सकते हैं। खरीफ मौसम में किसान मक्का के साथ अंतरवर्ती खेती के रूप में खीरा, भिंडी, बींस जैसी सब्जियों की खेती करके अपना मुनाफा बढ़ा सकते हैं।

मक्का बीज पर अनुदान के लिए आवेदन

बिहार सरकार की ओर से राज्य के किसानों को विभिन्न फसलों के बीज पर अनुदान दिया जाता है। जो किसान अनुदान पर मक्का के बीज प्राप्त करना चाहते हैं, वे किसान प्रत्यक्ष लाभ अंतरण, कृषि विभाग बिहार सरकार की आधिकारिक वेबसाइट पोर्टल brbn.bihar.gov.in पर जाकर आवेदन कर सकते हैं। आवेदन करने हेतु किसानों के पास कृषि विभाग के डीबीटी पोर्टल पर किसान पंजीकरण संख्या का होना जरूरी है। यदि नए किसान है और आपके पास पंजीयन संख्या नहीं है तो आपको आवेदन से पहले अपना पंजीयन करना अनिर्वाय होगा और पंजीयन संख्या प्राप्त करने के उपरांत ही आवेदन कर पायेंगे। राज्य सरकार की ओर से किसानों को घर बैठे ही होम डिलीवरी के माध्यम से बीज उपलब्ध कराया जा रहा है। जिसके लिए किसान को अतिरिक्त शुल्क देना होता है। किसान बीज अनुदान योजना से संबंधित विशेष जानकारी हेतु अपने जिले में अवस्थित कृषि कार्यालय एवं प्रखंड कृषि कार्यालय से संपर्क स्थापित कर सकते हैं।

उत्पादन व अच्छी कमाई के लिए मोटे अनाज की खेती

डॉ. प्रमोद मिश्रा, स्टेट कॉडिनेटर
आत्मा योजना

किसानों को मोटे अनाज की खेती से अधिक मुनाफा मिल सकता है क्योंकि यह फसल कम अवधी की है। फसल बुवाई के बाद 70 से 100 दिनों के मध्य कटाई के लिए तैयार हो जाती है। मोटे अनाज के उत्पादन में कम सिंचाई और खाद की आवश्यकता पड़ती है। हरित क्रांति से पूर्व भारत में मोटे अनाजों की खेती बहुतायत से की जाती थी परंतु आजादी के बाद धीरे–धीरे किसान एवं वैज्ञानिक धान एवं गेहूं को उपजाने में लग गये और मोटे अनाजों की खेती से दूर हो गये। परंतु धान–गेहूं की खेती से पर्यावरण एवं प्राकृतिक संसाधनों तथा मानव स्वास्थ्य पर पड़ रहे दुष्प्रभावों के कारण एकबार फिर से किसान मोटे अनाज की खेती की तरफ बढ़ रहे है। सामान्य रूप से ज्वार, बाजरा, मक्का, रागी, चीना, कोदो, सांवा, कंगनी एवं कुटकी आदि को मोटे अनाज के रूप में जाना जाता है। परंतु इन्हें भी दो भाग मोटे और छोटे अनाज के रूप में बांटा जा सकता है। जहां ज्वार, बाजरा, रागी, चीना एवं मक्का मूल रूप से मोटे अनाज हैं, वहीं कोदो, सांवा, हरा सांवा, कुटकी एवं कंगनी छोटे अनाज हैं। मोटे अनाज की खेती

आगामी 01 वर्ष में लक्ष्य के विरूद्ध पूर्ण/क्रियान्वित होने वाली नई योजनाओं/कार्यक्रमों की विवरणी

विभाग का नाम	योजना/ कार्यक्रम का नाम एवं उसकी संक्षिप्त विवरणी	कार्य योजना	बजट की उपलब्धता (राशि करोड़ में)			आगामी एक वर्ष का लक्ष्य	कार्यक्रम/योजना के पूर्ण/लक्ष्य प्राप्त होने की संभावित तिथि	त्रैमासिक लक्ष्य	योजना/ कार्यक्रम पूर्ण होने से होने वाले लाभ (लाभान्वित क्षेत्र एवं आबादी/ परिवार सहित)	अभ्युक्ति
			प्रावधानित राशि	उपलब्ध राशि	अतिरिक्त राशि की आवश्यकता					
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
कृषि विभाग, बिहार सरकार	**खरीफ मक्का प्रोत्साहन कार्यक्रम** इस योजना के सफल क्रियान्वयन से खाद्यान फसल अंतर्गत कोर्स सिरियल (खरीफ मक्का) के उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि आयेगी। खरीफ में मक्का उत्पादन से धान से निर्भरता समाप्त होगी। मक्का फसल के दाने एवं अवशेष से इथेनॉल उत्पादन होता है, जो राज्य में संचालित इथेनॉल के प्लांट के लिए सहायक है।	क्लस्टर मक्का प्रत्यक्षण एवं अनुदानित दर (80%) पर बीज वितरण	35.73	35.73	0.00	2.80 लाख एकड़	सितम्बर, 2024	योजना की अवधि 4 माह।	2.80 लाख एकड़ क्षेत्रफल आच्छादित एवं लगभग 1.50 लाख कृषक लाभान्वित होंगे।	योजना का कार्यान्वयन खरीफ, 2024 में किया जाना है। योजना कार्यान्वयन की विभागीय स्वीकृति प्राप्त है।
	पोषक अनाज (मिलेट्स) उत्पादन कार्यक्रम। इस योजना के सफल क्रियान्वयन से पोषक अनाज (ज्वार, बाजरा, रागी, कोदो, चीना, सावां एवं कुटकी) की बढ़ोतरी होगी जिससे राज्य में वर्षा से कमी वाले जिलों में वर्षा आश्रित खेती पर निर्भरता कम होगी एवं फसल विविधिकरण का लक्ष्य प्राप्त होगा।	क्लस्टर मिलेट्स प्रत्यक्षण (बीज एवं अनुदान के साथ 2000 रूपये की सहायता राशि	58.2	58.2	0.00	1.40 लाख एकड़	सितम्बर, 2024	योजना की अवधि 4 माह।	1.40 लाख एकड़ क्षेत्रफल आच्छादित एवं लगभग 1–1.25 लाख कृषक लाभान्वित होंगे।	योजना का कार्यान्वयन खरीफ, 2024 में किया जाना है। योजना कार्यान्वयन की विभागीय स्वीकृति प्राप्त है।
	खाद्य एवं पोषण सुरक्षा (कृषोन्नति योजना)–दलहन अन्तर्गत अरहर उत्पादन कार्यक्रम इस योजना के सफल क्रियान्वयन से अरहर फसल के उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि होगी, जिसके फलस्वरूप किसानों की आय में वृद्धि होगी तथा दलहन के मामले में राज्य की आत्मनिर्भरता बढ़ेगी।	फसल प्रत्यक्षण, प्रमाणित बीज उत्पादन एवं अनुदानित (80%) बीज वितरण, IPM एवं INM वितरण	936.06	936.06	0.00	0.65 लाख एकड़	अक्टूबर–नवम्बर, 2024	योजना की अवधि 5–6 माह।	0.65 लाख एकड़ क्षेत्रफल आच्छादित एवं लगभग 75 हजार कृषक लाभान्वित होंगे।	योजना का कार्यान्वयन खरीफ, 2024 में किया जाना है। योजना कार्यान्वयन की विभागीय स्वीकृति प्राप्त है।

जायद और खरीफ दोनों मौसम में किसान कर सकते हैं। जबकि छोटे अनाज को किसी भी मौसम में लगाया जा सकता है। राजेन्दर कौनि –1 कंगनी की एक उत्तम किस्म है।

कैसे करें मोटे अनाज की खेती

मोटे अनाज की फसलों के अच्छे विकास के लिए और अधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु खेत की मिट्टी का हल्का दोमट होना सबसे अच्छा है। परंतु उचित जल निकास की व्यवस्था के साथ दोमट मिट्टी में भी इनकी खेती की जा सकती है।

बीज दर एवं बुआई की विधि

एक हैक्टेयर खेत के लिए मोटे अनाजों का 8 से 10 किलोग्राम बीज जबकि छोटे अनाजों के लिए 3 से 4 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है। नर्सरी तैयार कर रोपाई करने से उत्पादन ज्यादा प्राप्त होता है। परंतु खेत में सीडड्रिल अथवा छिटकाव विधि से भी इनकी खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है। ज्वार, बाजरा, मक्का, मडुआ की बुआई जून माह में करने से जबकि चीना की बुआई अप्रैल माह में करने से अच्छी उपज प्राप्त होती है। कोदो, कंगनी, सांवा, हरा सांवा आदि को उचित जल निकास वाली ऊपरी भूमि में जून और जुलाई में लगाने से अच्छी उपज मिलती है।

मोटे अनाज की फसल में सिंचाई और खाद

मोटे अनाज की खेती करने से पहले खेत की तैयारी के समय एक हैक्टर के हिसाब से 13 से 15 टन सड़ी गोबर की खाद डालें और रासायनिक खाद की बात करें तो नाइट्रोजन 40 किलोग्राम, फॉस्फोरस 20 किलोग्राम, पोटाश 20 किलोग्राम प्रति हैक्टर के दर से देना चाहिए। इन में नाट्रोजन की चौथाई मात्रा बुवाई के 30 दिन के बाद और चौथाई मात्रा 50 दिन के बाद खड़ी फसल में छिड़काव करना है। नाइट्रोजन का इस्तेमाल सिंचाई करके या तो बारिश हो जाने के बाद करें। मोटे अनाज प्रायः वर्षा आधारित फसल होती है इसलिए इस फसल में बहुत सिंचाई नहीं करनी है। यदि बारिश नहीं होती है तो दो सिंचाई करनी होगी एक फसल जब 25 से 30 दिनों की हो जाये और दूसरी सिंचाई 45 से 50 दिन की हो जाने के बाद करनी है। इन फसलों में निकाई गुड़ाई बीज बुवाई के 20 दिन बाद करनी चाहिए। मोटे अनाज की खेती में लागत कम और मुनाफा अधिक है इस लिए किसान इन की खेती से लाखों रूपए की कमाई कर सकते हैं।

कम पानी में भी होता है उत्पादन

क्या आप जानते हैं कि एक ऐसी फसल है जिससे आप बिना ज्यादा पानी लगाए, एक बार मेहनत कर के हजारों रुपये का मुनाफा कमा सकते हैं? जी हाँ, वह फसल है रागी! रागी के बारे में शायद आप जानते हों, शायद नहीं भी जानते हों। लेकिन रसोई में इसका बहुत इस्तेमाल होता है और कई स्वादिष्ट व्यंजनों को बनाने में इसका स्वाद लाजवाब होता है।

रागी की खेती कैसे करें?

रागी की खेती करना बहुत आसान है। इसकी खेती कोई भी व्यक्ति कर सकता है। रागी की खेती के लिए सबसे पहले बीजों की जरूरत होती है। यह बीज से ही उगाया जाता है। ये बीज आपको आसानी से किसी भी बीज भंडार पर मिल जायेंगे। वहां से बीज खरीद कर आप अपने खेत में लगा सकते हैं। रागी की सबसे अच्छी बात यह है कि इसे उगाने के लिए बहुत कम पानी की जरूरत होती है। रागी की फसल तैयार होने में लगभग 80 से 90 दिनों का समय लगता है।

रागी की खेती से कितनी कमाई हो सकती है?

अगर रागी की कीमत की बात करें तो बाजार में इसकी कीमत 4 हजार रुपये प्रति क्विंटल से शुरू होती है। अगर आप रागी की खेती करते हैं तो आपको एक फसल से लगभग 40 से 50 हजार रुपये का मुनाफा हो सकता है। आप एक से दो एकड़ में भी इसकी खेती से अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं।

खरीफ 2024 के विभिन्न योजना अंतर्गत फसलवार अनुदान दर

RKVY (PPR Based Scheme)

खरीफ 2024 के विभिन्न योजना अंतर्गत घटकवार, फसलवार अनुदान दर की विवरणी।

क्र० सं०	योजना का प्रकार	योजना का नाम	अनुदान सहायता राशि दर	फसल	अधिकतम रकवा जिसके लिए अनुदान देय है।
1	केन्द्र प्रायोजित योजना	बिहार में बेबी कॉर्न उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु बेबी कॉर्न का बीज वितरण कार्यक्रम	रू० 500/—प्रति कि०ग्रा० अथवा लागत का 50% जो न्यूनतम हो देय होगा।	बेबी कॉर्न	अधिकतम 05 एकड़ भूमि के लिए देय होगा।
		बिहार में स्वीट कॉर्न उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु स्वीट कॉर्न का बीज वितरण कार्यक्रम	रू० 1500/—प्रति कि०ग्रा० अथवा लागत का 50% जो न्यूनतम हो देय होगा।	स्वीट कॉर्न	अधिकतम 05 एकड़ भूमि के लिए देय होगा।
		बिहार में मिलेट्स उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु मिलेट्स का प्रत्यक्षण कार्यक्रम	रू० 4000/—प्रति एकड़ (रू० 2400/— प्रति एकड़ राष्ट्रीय कृषि विकास योजना एवं रू० 1600/— प्रति एकड़ राज्य योजना से अतिरिक्त सहायता)	मिलेट्स	अधिकतम 02 एकड़ भूमि के लिए देय होगा।
		बिहार में खरीफ में मक्का को बढ़ावा देने हेतु मक्का का बीज वितरण कार्यक्रम	रू० 150/—प्रति कि०ग्रा० (रू० 100/— प्रति कि०ग्रा० राष्ट्रीय कृषि विकास योजना एवं रू० 50/— प्रति कि०ग्रा० राज्य योजना से अतिरिक्त सहायता)	मक्का	अधिकतम 02 एकड़ भूमि के लिए देय होगा।

चतुर्थ कृषि रोड मैप के तहत राज्य योजना अंतर्गत खेतीबारी कृषि क्लिनिक योजना के कार्यान्वयन हेतु वित्तीय वर्ष 2023–24 के लिए 424.00 लाख (चार करोड़ चौबीस लाख) रूपये की निकासी एवं व्यय की स्वीकृति। चतुर्थ कृषि रोड मैप के तहत राज्य योजना अंतर्गत खेती बारी कृषि–क्लिनिक योजना के कार्यान्वयन हेतु वित्तीय वर्ष 2023–24 में 424.00 लाख (चार करोड चौबीस लाख) रूपये की निकासी एवं व्यय की स्वीकृति प्रदान की जाती है।

2. इस योजना का मुख्य उद्देश्य किसानों को फसल उत्पादन संबंधित सभी सेवाएँ यथा– मिट्टी जाँच की सुविधा, बीज विश्लेषण की सुविधा, कीट/व्याधि प्रबंधन संबंधित सुझाव, पौधा संरक्षण संबंधित छिड़काव भुरकाव हेतु आवश्यक उपकरणों एवं तकनीकी विस्तार सेवा का स्थानीय स्तर पर उपलब्धता सुनिश्चित कराया जाना है। इससे फसलों के उत्पादन, उत्पादकता एवं उत्पाद की गुणवत्ता में वृद्धि सहित किसानों की आय में वृद्धि सुनिशि्चत होगी।

3. इस योजना का कार्यान्वयन राज्य के सभी 101 अनुमंडलों में किया जायेगा। योजनान्तर्गत प्रत्येक अनुमंडल के 2 (दो) प्रखंडों में खेतीबारी कृषि क्लिनिक, इसके अंतर्गत एक अनुमंडल के प्रखंड मुख्यालय में तथा दूसरा किसी अन्य उपयुक्त प्रखंड मुख्यालय में स्थापना की जायेगी। जिलावार भौतिक एवं वित्तीय लक्ष्य अनुसूची 01 के रूप में संलग्न है।

4. खेतीबारी कृषि क्लिनिक में सेवाएँ प्रदान करने के लिए कृषि स्नातकध्कृषि व्यवसाय प्रबंधन स्नातक तथा राज्य/केन्द्रीय विश्वविद्यालय या किसी अन्य विश्वविद्यालय से कृषि उद्यान में स्नातक जो आईसीएआर/यूजीसी द्वारा मान्यता प्राप्त हो, पात्र होंगे। इसके अतिरिक्त उपरोक्त के अनुपलब्ध होने पर न्यूनतम दो वर्षों का कृषि/उद्यान में अनुभव प्राप्त डिप्लोमाधारी/कृषि विषय में इन्टरमीडिएट तथा रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, जीव विज्ञान में स्नातक के योग्य प्रार्थियों पर भी विचार किया जायेगा।

5. खेतीबारी कृषि–क्लिनिक की स्थापना हेतु कुल अनुमानित लागत 05.00 लाख रूपये का 40 प्रतिशत अधिकतम 02.00 (दो) लाख रूपये की राशि सहायता अनुदान के रूप में दी जायेगी तथा लागत की शेष राशि का वहन आवेदक द्वारा स्वयं किया जायेगा। योजनान्तर्गत चयनित लाभार्थी बैंक से ऋण प्राप्त कर भी योजना का लाभ ले सकेंगे। सहायता राशि का भुगतान दो समान किस्तों में किया जायेगा ।

6. खेतीबारी कृषि–क्लिनिक की स्थापना हेतु चयनित लाभार्थियों को निःशुल्क प्रशिक्षण देने के साथ ही उनकी इच्छा अनुसार उर्वरक, बीज, कीटनाशी लाईसेंस, कस्टम हायरिंग सेंन्टर सहित अन्य आवश्यक योजनाओं का लाभ देने में प्राथमिकता दी जायेगी।

खेतीबारी कृषि-क्लिनिक में उपलब्ध आवश्यक उपकरण/यंत्र/सामग्री की सूची एवं अनुमानित राशि का विवरण निम्नवत है :

क्र०स०	इकाई का नाम	संख्या	अनुमानित राशि
01.	फर्नीचर (1) टेबल 4 कुर्सी)	1	35000
02.	जाँच इत्यादि हेतु आवश्यक फर्नीचर		30000
03.	अन्य व्यय (विद्युत, जल, पेपर, ग्लासवेयर, रूई) आदि	1	20000
04.	कम्प्यूटर, स्कैनर, प्रिंटर	1	80000
05.	पिक्टोरियल चार्ट (पोषक तत्व की कमी, मुख्य फसलों में कीट एवं व्याधि, पीडी रेसीओ)	8	7200
06.	मिट्टी जाँच मिनी किट	1	140000
07.	मिट्टी जाँच रसायन नमूना विश्लेषण हेतु	150	22500
08.	लीफ कलर चार्ट	1	1000
09.	सीड टेस्टिंग किट स्टील बॉडी	1	14000
10.	वाईनाकुलर माईक्रोस्कोप	1	58000
11.	रेफ्रिजरेटर	1	15000
12.	कैमरा	1	8000
13.	मैगनीफाइंग ग्लास	1	2000
14.	इन्सेक्ट डिस्प्ले बॉक्स	1	8500
15.	फोरमलिन 5 ली	1	500
16.	व्हाइटबोर्ड	1	1000
17.	नेपशेक स्प्रेयर	1	3500
18.	डस्टर कम स्प्रेयर	1	14000
19.	रॉकर स्पेयर (गटोर)	1	7500
20.	हाईप्रेसर इंजन ऑपरेटेड पावर स्प्रेयर (04 स्ट्रोक) मॉउनटेड स्प्रेयर	1	28000
21.	सुरक्षा उपकरण	1	1500
22.	प्राथमिक चिकित्सा कीट	1	800
23.	अग्निशामक यंत्र	1	2000
	कुल योग		**500000**

मछली पालन को बनाया रोजगार रिपुसूदन

बांका जिला के बिंदी गांव निवासी रिपुसूदन सिंह हैं, जो पिछले कई वर्षो से मछली पालन करते आ रहे हैं। खेती के दौर आज के किसान मत्स्य पालन को एक बेहतर रोजगार के रूप में देख रहे हैं, क्योंकि कम समय में अधिक आमदनी प्राप्त हो जाता है। आज की शिक्षित युवा पीढ़ी झुकाव मत्स्य पालन की ओर बढ़ रहा है। हालांकि ज्यादा कमाई अर्जित करने के लिए अधिकतर किसान सीलन मछलियों का पालन करते हैं, लेकिन बाजारों में प्रतिस्पर्धा को देखते हुए अच्छी कीमत नहीं मिल पाता है। रिपुसूदन सिंह ने कहा कि पिछले कई सालों से खेती के साथ मछली पालन कर रहे हैं। 3 बीघा की भूमि में तीन तालाबें है। जिसमें इन दिनों वे बड़े पैमाने पर मछली पालन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मत्स्य पालन एक अच्छा रोजगार है, लेकिन समय के साथ बदलाव करना भी अति आवश्यक है। अपने तालाब में फिलहाल सीलन की जगह रेहू, ग्लास कार्फ, कातल, मिर्गन जैसे आईएमसी मछलियों का पालन कर रहे हैं। बाजार में प्रतिस्पर्धा अधिक रहने के कारण सीलन में कम बचत होने लगा तो पिछले 5 वर्षों से सीलन के साथ आईएमसी मछलियों का पालन करने लगे। हालांकि पिछले एक साल से सिर्फ आईएमसी मछलियों का पालन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि पांच साल पहले तक सीलन मछली से 30 से 40 प्रतिशत तक का मुनाफा हो जाता था, लेकिन बाजार में केरल से ताजा मछली आने की वजह से मत्स्य पालकों को 10 फीसदी लाभ मिलना मुश्किल हो गया है। जबकि देसी मछली लोगों को भी काफी पसंद आता है और दर भी अच्छा मिल जाता है। किसान ने कहा कि सीलन मछली 6 से 7 महीने में तैयार हो जाता है, लेकिन आईएमसी नस्ल की मछलियों को तैयार होने में कम से कम 11 महीने का समय लग जाता है। इसे ढंग से पाला जाए तो 8 महीने में तैयार हो जाता है। सीलन की अपेक्षा आईएमसी मछली के पालन में कम खर्च होता है। सीलन को दो वक्त दाना देना पड़ता है जबकि आईएमसी को बांस में रस्सी की मदद से बोरे में खाना दिया जाता है जो 3 से 4 दिनों तक चलता है। सीलन को तैयार करने में 80 से 90 रुपए की खर्च आता है और बाजार में 110 रुपए किलो में बिता है। वहीं आईएमसी की एक मछली पर 35 रुपए खर्च आता है और बाजार मे 170 से 190 रूपए किलो तक बिकता है। आईएमसी मछलियों को घर में ही दाना को तैयार कर खिलाते हैं। इस दाना को बेसन, धान का चोकर, सरसों की खल्ली को मिलाकर बनाते हैं। उन्होंने बताया कि मछली पालन से पांच लाख तक की कमाई हो जाती है।

शुष्क बागवानी के तहत सरकार दे रही सब्सिडी

बिहार के किसान अब नकदी फसलों की खेती पर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं। इसमें फलों की खेती किसानों को अधिक आकर्षिक कर रहा है। सरकार भी फलों की खेती को बढ़ावा दे रही है। फलों की खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को अनुदान भी दे रही है। गया के किसानों का रुझान पिछले कुछ वर्षो में फल की बागवानी की तरफ बढ़ी है। उद्यान विभाग के मुताबिक बागवानी योजना के तहत आंवला, एप्पल बेर, अमरुद और नींबू के लिए खेती को बढ़ावा दी जा रही है। किसानों को खेती के लिए राज्य सरकार 50 फीसदी अनुदान दे रही है। आंवला के

लिए 30 हेक्टेयर, एपल बेर के लिए 40 हेक्टेयर, नींबू के लिए 60 हेक्टेयर और अमरूद के लिए 40 हेक्टेयर लक्ष्य रखा गया है। कम वर्षा वाले क्षेत्र में फल पौधे को बढ़ावा मिल सकेगा। इन पौधे को लगाने पर कुल लागत का 50 फीसद या अधिकतम 50 हजार रुपए प्रति हेक्टेयर सब्सिडी दिए जाएंगे। इसके अलावा किसानों को कम से कम 5 पौधों से लेकर 4 हेक्टेयर की खेती करने पर ही सब्सिडी दी जाएगी। जो किसान फलों की बागवानी करना चाहते हैं सरकार के द्वारा योजनाओं का लाभ उठाना चाहते हैं तथा उद्यान विभाग के वेबसाइट पर आनलाइन आवेदन कर सकते हैं। आवेदन स्वीकृत होने के बाद विभाग द्वारा सब्सिडी पर पौधा उपलब्ध कराया जाएगा। इस संबंध में गया जिला उद्यान पदाधिकारी का कहना है कि गया जैसे जिले में बागवानी किसानों के लिए बेहतर विकल्प है। इससे फल लेने के साथ यह पेड़ पर्यावरण के लिए भी काफी लाभदायक है।

ड्रैगन फ्रूट्स की खेती पर 40 प्रतिशत की सब्सिडी

खेतीबारी डेस्क

खेती–बाड़ी को पहले से और ज्यादा लाभकारी बनाने के लिए राज्य सरकार चौथे कृषि रोड मैप के अनुसार कार्य कर रही है। सरकार इसके तहत कृषि एवं संबंधित क्षेत्रों का विस्तार सुनिश्चित करने के लिए लक्ष्य तय कर किसानों को प्रोत्साहित कर रही है। इसके लिए कई योजनाओं के तहत किसानों को सुविधाएं भी दी जाती है। ऐसे में बिहार सरकार भी राज्य के किसानों की आय को दोगुनी करने के लिए प्रतिबद्ध है। इस उद्देश्य से बिहार सरकार ने पिछले वर्ष से चौथे कृषि रोड मैप के तहत कृषि विस्तार का कार्य आरंभ किया है। अब इस चौथे कृषि रोड मैप के तहत राज्य सरकार ने विदेश फसल ड्रैगन फ्रूट की खेती को भी शामिल किया है। बताया जा रहा है कि ड्रैगन फ्रूट की खेती से अब बिहार के किसानों की किस्मत बदल सकती है। राज्य के कई हिस्सों की मिट्टी को ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए अनुकूल पाया गया है, जिसे ध्यान में रखते हुए सरकार ने इसकी खेती का क्षेत्र विस्तार करने का फैसला किया है।

किसानों को ड्रैगन फ्रूट्स की खेती पर मिलेगी सब्सिडी

बिहार सरकार किसानों की आमदनी दोगुनी करना चाहती है, जिसके के लिए ड्रैगन फ्रूट्स योजना लाई है। इस योजना के तहत विदेशी फल ड्रैगन फ्रूट्स की खेती के लिए राज्य के 21 जिलों की मिट्टी को उपयुक्त पाया गया है। इन जिलों में ड्रैगनफ्रूट की खेती के लिए किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए सब्सिडी देने का फैसला किया है। किसानों को ड्रैगन फ्रूट्स की खेती पर सरकार से 40 प्रतिशत की सब्सिडी मिलेगी। बिहार में किसान नई फसलों की खेती की ओर आकर्षित हो रहे हैं। जिसमें मखाना और ड्रैगन फ्रूट की खेती युवाओं को पसंद आ रही है। सरकार ने ड्रैगन फ्रूट योजना के लिए सूबे 21 जिलों को चुना है। राज्य में इन जिलों को मुजफ्फरपुर, पटना, भोजपुर, गोपालगंज, जहानाबाद, सारण, सीवान, सुपौल, औरंगाबाद, बेगूसराय, भागलपुर, गया, कटिहार, किशनगंज, मुंगेर, नालंदा, पश्चिम व पूर्वी चंपारण, पूर्णिया, समस्तीपुर और वैशाली।

तीन चरणों में किया जाएगा सब्सिडी का भुगतान

बिहार सरकार की ओर से ड्रैगन फ्रूट की खेती पर किसानों को मिलने वाली सब्सिडी का भुगतान तीन चरणों में किया जाएगा। किसानों को यह राशि हर बार फसल की स्थिति देखकर दी जाएगी। इसमें सब्सिडी की पहली किस्त 60 प्रतिशत या 1.80 लाख रुपए प्रति किसान प्रति हेक्टेयर दी जाएगी। दूसरे चरण में कुल सब्सिडी का 20 प्रतिशत यानी 60 हजार रुपए प्रति हेक्टेयर 75 प्रतिशत पौधे जीवित रहने की स्थिति में और तीसरे चरण में अनुदान की अंतिम किस्त शेष 20 प्रतिशत राशि उसके अगले से 90 प्रतिशत पौधों के जीवित रहने पर भुगतान किया जाएगा।

चार सौ रूपए प्रति किलो तक बिकता हैं ड्रैगन फ्रूट्स

ड्रैगन फ्रूट एक विदेशी फल है, जो मैक्सिको और मध्य एशिया में पाया जाता है। ड्रैगन फ्रूट एक दम अनानास की तरह दिखाई देता है, लेकिन इसका रंग गुलाबी या लाल होता है। ड्रैगन फ्रूट के कच्चे फल हरे रंग के होते हैं, जो पकने पर लाल या गुलाबी रंग में परिवर्तित हो जाते हैं। इसके फल में विटामिन बी, सी कैल्शियम, फास्फोरस और मैग्निशियम भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। यह एंटी ऑक्सीडेंट का काम करता है। यह एक लो कैलोरी फल है, जो वजन घटाने में मददगार है। बाजार में ड्रैगन फ्रूट के फल 100 रुपए से लेकर 400 रुपए प्रति किलोग्राम की दर से बिकते हैं। ड्रैगन फ्रूट की खेती लागत प्रति क्विंटल बहुत कम है। ड्रैगन फ्रूट का एक पौधा सीजन में 3 से 4 बार फल देता है। प्रत्येक पौधे पर 50 से 120 फल लगते हैं। ड्रैगन फ्रूट की फसल से औसत पैदावार चार से पांच टन प्रति एकड़ तक हो सकती है। ड्रैगन फ्रूट का एक पौधा 10 से 15 साल तक पैदावार देने में सक्षम होता है। ड्रैगन फ्रूट कम वर्षा वाले क्षेत्रों के किसानों के लिए वरदान है। शुष्क और कम वर्षा से प्रभावित क्षेत्रों में किसान ड्रैगन फ्रूट की खेती कर लाखों रुपए का मुनाफा आसानी से कमा सकते हैं।

17वीं किस्त का भुगतान

पीएम किसान सम्मान निधि

76,12,995 किसानों के खाते में 1562 करोड़ रुपये अंतरण

बिहार माननीय कृषि मंत्री श्री मंगल पाण्डे ने कहा कि आज देश के माननीय प्रधानमंत्री के द्वारा प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत 17वीं किस्त के रूप में बिहार के 76,12,995 किसानों के बैंक खाते में 1562 करोड़ रूपये का अंतरण किया गया। माननीय कृषि मंत्री ने इसके लिए देश के यशस्वी प्रधानमंत्री का आभार व्यक्त किया। उन्होंने आगे बताया कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना देश के सभी रैय्यत किसान परिवारों को आय सहायता प्रदान करने की दृष्टि से केन्द्र सरकार द्वारा प्रायोजित योजना है, जिसकों केन्द्र सरकार द्वारा 01 दिसम्बर, 2018 से लागू किया गया है। इस योजना का उद्देश्य फसल के स्वस्थ एवं अच्छी उपज प्राप्त करने हेतु किसान को खेती के लिए विभिन्न आवश्यक उपादान क्रय करने में वित्तीय मदद प्रदान करना है, ताकि किसानों को प्रत्याशित कृषि आय को सुनिश्चित किया जा सके। श्री पाण्डे ने कहा कि इस योजना पर खर्च होने वाली राशि शत–प्रतिशत केन्द्र सरकार द्वारा वहन किया जाता है। इस योजना के अन्तर्गत रैय्यत किसान परिवार को सहायता राशि के रूप में 6,000 रूपये प्रतिवर्ष की दर से प्रत्येक चार माह के अन्तराल (अप्रैल से जुलाई, अगस्त से नवम्बर एवं दिसम्बर से मार्च) पर 02–02 हजार रूपये तीन बराबर किस्तों में दिया जाता है।

केला को 35 दिनों तक रख सकते हैं ताजा

किसान का केला खेत से निकलकर बाजार तक अब आसानी से सुरक्षित पहुंचेगा। मतलब साफ है कि अगर आप अपने खेत से केला की खान्धि की कटाई करते हैं और उसे बेचने में दो चार दिन भी लग जाएं या केला में इस दौरान ढुलाई के क्रम में दाग धब्बे लग जाते है या गलने सड़ने की स्थिति होने से आपको ये तकनीक आसानी से 35 दिनों तक सेफ रख सकती है, जिससे आप आसानी से ऊंची कीमत पर समय रहते बेच सकते हैं। इस बारे में भोला पासवान शास्त्री कृषि महाविद्यालय के हॉर्टिकल्चर के एक्सपर्ट डॉ. सूरज प्रकाश कहते हैं कि किसान भाई को अपने केला बेचने में ये उपाय बहुत कारगर साबित होते हैं। दरअसल उन्होंने कहा जब केले की फसल को काटते हैं तो उस समय उन्हें अपनी केला की फसल को ध्यान से काटना चाहिए। दूसरी चीज केला के घौर को काटते समय एक–एक करके उसे काटने चाहिए और फिर सब केला के प्लास्टिक ट्रे में रखकर ऊसे फ्रेश और ताजे पानी में अच्छी तरह धो लेना चाहिए। जिससे ठंडे पानी में धोने से केले में मौजूद तापमान भी कम हो जाता हैं और केले में जो बायोलॉजिकल तत्व (Ethyline) इथोफैन गैस पाए जाते हैं जिससे जल्दी पकता हैं ऐसे में उस गैस का प्रभाव भी कम हो जाएगा। तत्पश्चात केला को धोने के बाद कुछ देर उन्हें खुली और ठंडी हवा में रख दें जहां उनका पानी पूरी तरह से सूख जाए।

ऐसे करें कटाई और ढुलाई केला रहेगा फ्रेश

हालांकि उन्होंने कहा इसके लिए बिहार सरकार सब्सिडी भी देती है। ऐसे में जब हम केला की कटाई करें तो एक एक कर आराम से उपरी हिस्सा से काटे और केला को बाजार तक सुरक्षित ले जानें में इन चीजों का प्रयोग बेहतर साबित होगा। दरअसल उन्होंने कहा जब हम केला की कटाई करें तो इस दौरान हमेंप्लास्टिक ट्रे का प्रयोग कर इन सभी उपायों को अपनाकर कर आसानी से लंबे दिनों तक केला को फ्रेश रख सकते हैं। दूर दूर तक भेज पायेंगे।

सिंचाई की कम सुविधा वाले खेतों में लगायें ये फसलें

खरीफ फसलों के बीज की बुआई शुरू हो चुकी है और मानसून की दस्तक राज्य के कई जिलों में दे चुकी है। ऐसे के कई किसान भाई अपनी खेत में विविध फसल की बुवाई के लिए तैयारी कर रहे है और कई किसान ने खेत तैयार भी कर लिया है। मगर कई ऐसे भी किसान है जिनको खेत की सिंचाई के लिए पानी की व्यवस्था नहीं है। इन किसान को इन फसल की खेती कर के अच्छी कमाई के साथ अधिक मुनाफा कर सकते है। कम सिंचाई वाले विस्तार अरहर, तिल और उड़द की खेती कर के अच्छा उत्पादन और अधिक कमाई कर सकते है। यह तीनों फसलें कम वर्षा वाले क्षेत्र में भी अच्छे से विकास और अधिक उत्पादन देती है। और इन के बीज की बुआई मुख्य खेत में करने के बाद भी अगर 20 दिन तक बारिश या सिंचाई नहीं होती तब भी इस फसल में कोई नुकशान नहीं होता है।

अरहर की खेती करने के लिए किसान को बहुत पुराने बीज की बुवाई नहीं करनी है। अरहर की उन्नत किस्म 1. बहार, 2. नरेंद्र अरहर–1, 3. पूसा–9, अवधि– 260 से 280 दिनों तक, 25 अगस्त से 25 सितम्बर तक अरहर की किस्में पूसा–9 सरद, भागलपुर एवं मुंगेर क्षेत्रों के लिए सबसे उपयुक्त अरहर की अच्छी किस्में– मालवीय एमएएल–13 है। यह अरहर की फसल बीज बुवाई के बाद 220 दिन में अच्छे से तैयार हो जाती है। एक हैक्टर जमीन में अरहर की खेती करनी है तो 18 किलोग्राम बीज की जरूरत होगी। अरहर की खेती कतार में की जाती है और कतार से कतार की दूरी 60 सैमी की और पौधे से पौधे की दूरी 25 सेमी तक की रखनी है। इन में एक हैक्टर के हिसाब से लगभग 15 से 20 हजार की लागत होती है और 50 से लेकर 70 हजार तक की कमाई होती है।

तिल की खेती : जिस किसान को खेती की सिचाई करने की सुविधा नहीं है इन किसान को तिलहनी फसल यानि के तिल की खेती से भी अधिक कमाई होती है। यह तिल की फसल भी कम बारिश वाले विस्तार में भी अच्छा उत्पादन प्राप्त होता है। अगर आप एक हैक्टर जमीन में तिल की खेती करना चाहते है तो आप को 20 किलोग्राम बीज की जरूरत होगी।

मुख्यमंत्री उद्यमी योजना के तहत-अमर बने उद्यमी

बांका जिला के अमरपुर प्रखंड अंतर्गत मोजाहिदपुर गांव निवासी अमर कुमार और उनकी पत्नी ने मिलकर आटा की चक्की चला रहे हैं और इससे अच्छी आमदनी भी प्राप्त कर रहे हैं। स्थनीय किसानों से ही गेहूं और चना की खरीदारी कर शुद्ध आटा, सत्तू और बेसन तैयार करते हैं। इसमें किसी प्रकार का कोई मिलावट नहीं रहता है। उन्होंने इस व्यवसाय को आगे बढ़ाने के लिए अपने नाम से ब्रांडिंग भी करते हैं। 5 किलो और 25 किलो के आटा का पॉकेट बनाकर बिक्री करते हैं। जिससे सालाना 10 लाख तक कमाई हो जाती है।

लोन लेकर शुरू किया आटा चक्की का धंधा

मुख्यमंत्री उद्यमी योजना के तहत 10 लाख लोन लेकर ऑटोमेटिक आटा

चक्की, रोस्टर, पैकिंग, सिलाई मशीन की खरीदारी कर मिल में आटा, सत्तू और बेसन तैयार कर इसकी पैकेजिंग के बाद स्थानीय बाजार में बिक्री करने लगे। तथा बाजार में घूम–घूमकर आटा, सत्तू और बेसन की बिक्री करते हैं। उन्होंने बताया कि 5 किलो आटा की कीमत 165 रुपए तथा 25 किलो आटा की कीमत 750 रुपए है। उन्होंने बताया कि सत्तू और बेसन का 200 ग्राम और 500 ग्राम का पैक बनाते हैं। अब तो सेल भी बढ़ गया है।

खरीफ 2024 के विभिन्न योजना अंतर्गत घटकवार, फसलवार अनुदान दर की विवरणी

क्र० सं०	योजना का प्रकार	योजना का नाम	अनुदान सहायता राशि दर	फसल	अधिकतम रकवा जिसके लिए अनुदान देय है।
1	केन्द्र प्रायोजित योजना	खाद्य एवं पोषण सुरक्षा (कृषोन्नति योजना) अन्तर्गत क्षेत्र आच्छादन हेतु अनुदानित बीज वितरण	मूल्य का 50% या रू0 150/kg, में जो न्यूनतम हो देय होगा।	संकर मक्का	5 एकड़
			मूल्य का 80% या रू0 123.20/kg, में जो न्यूनतम हो देय होगा।	अरहर (10 वर्षो से कम अवधि के प्रभेद)	2 एकड़
			मूल्य का 80% या रू0 25/kg, में जो न्यूनतम हो देय होगा।	अरहर (10 वर्षो से अधिक अवधि के प्रभेद)	2 एकड़
2		खाद्य एवं पोषण सुरक्षा (कृषोन्नति योजना) अन्तर्गत क्षेत्र आच्छादन हेतु प्रमाणित बीज उत्पादन कार्यक्रम	5000 रू0 प्रति क्वी0	अरहर	इस कार्यक्रम का कार्यान्वयन बिहार राज्य बीज निगम, पटना के द्वारा कराया जाता है। प्रोत्साहन सहायता राशि का 75 प्रतिशत राशि किसान को एवं शेष 25 प्रतिशत राशि बिहार राज्य बीज निगम को प्रमाणीकरण शुल्क सहित अन्य खर्चो पर व्यय करने हेतु देय है।

मूंगफली की खेती में उत्पादन से मुनाफा

किसान मूंगफली की खेती करते हैं। खेती करने से पहले आप को इन की उन्नत किस्में के बारे में जानकारी होनी चाहिए ताकि मूंगफली की खेती उन्नत तरीके से कर के आप अधिक उत्पादन प्राप्त कर शके और अच्छी कमाई कर के अधिक मुनाफा प्राप्त कर सकते हैं।

मूंगफली की उन्नत किस्में

मूंगफली की यह 3 किस्में अधिक उत्पादन के लिए जानी जाती है । मूंगफली की उन्नत किस्में हैं पर इन में एक डीएच–86 मूंगफली किस्म DH–86, आरजी– 425 (RG–425), टीजी 37 ए (TG–37)।

डीएच-86 मूंगफली किस्म

मूंगफली की यह उन्नत किस्में के बीज की बुवाई खरीफ मौसम मौसम में कर सकते है। मूंगफली के इस किस्में के बीज में 45 प्रतिशत तेल की मात्रा होती है। और प्रोटीन की बात करें तो 26 प्रतिशत पाए जाता है। इन के बीज मुख्य खेत में बुवाई के बाद 120 से लेकर 125 दिन बाद अच्छे से तैयार हो जाता है और मूंगफली की यह उन्नत किस्म के बीज की बुवाई एक हैक्टर जमीन में की है तो 15 से 20 क्विंटल तक का उत्पादन प्राप्त होता है।

आरजी- 425 (RG-425)

मूंगफली की यह उन्नत किस्म खरीफ मौसम के लिए अति उपयुक्त है और आरजी 425 किस्म को राज दुर्गा के नाम से भी जाना जाता है। मूंगफली की यह उन्नत किस्म के बीज मुख्य खेत में बुवाई के बाद 120 से 125 दिन में अच्छे से पक के तैयार हो जाती है। और मूंगफली की यह वैरायटी के बज की बुवाई एक हैक्टर जमीन में की है तो 20 से 35 क्विंटल तक उत्पादन प्राप्त होता है। इन के पौधे माध्यम फैलते है और अधिक सूखे को भी सहन कर सकती है।

टीजी 37 ए (TG-37)

मूंगफली की यह उन्नत किस्म के पौधे फैलावदार और छोटे आकर के होते है। इन के दाने में तेल की मात्रा 51 प्रतिशत तक की होती है। और बीज बुवाई के बाद 122 से लेकर 125 दिन में अच्छे से तैयार हो जाती है। इन की पैदावार की बात करें तो एक हैक्टर जमीन से 18 से 20 क्विंटल तक का उत्पादन प्राप्त होता है। मूंगफली की यह उन्नत किस्म की खेती तेल उत्पादन के लिए अधिक की जाती है।

मूंगफली का उत्पादन कैसे बढ़ाए

मूंगफली की खेती से अधिक उत्पादन के लिए आप को उन्नत किस्में के बीज को सही समय पर बीज की बुवाई करनी है। बीज बुवाई से पहले बीज को उपचारित जरूर करें और जब फसल बड़ी हो जाए तब आप को इन की अच्छे से देखभाल करनी होगी जैसे की मूंगफली की फसल में लगने काले रोग और कीट का नियंत्रण, समय सर सिंचाई और खाद इन सभी बाते पर आप को गौर करना है तब जाकर अधिक उत्पादन और बंपर कमाई होती है।

किसान चौपाल कार्यक्रम का आयोजन

खरीफ किसान चौपाल कार्यक्रम राज्य के सभी 8058 ग्राम पंचायतों में आयोजन किया जाता है। इस कार्यक्रम में वैज्ञानिक/विशेषज्ञ/प्रसार पदाधिकारी/ कर्मी के माध्यम से कृषि एवं संबद्ध विभाग के योजनाओं एवं आधुनिक तकनीकी से खेती करने का प्रचार–प्रसार किया जता है। राज्य में कृषि के विकास के लिए उपजाऊ मिट्टी, पर्याप्त मात्रा में भूगर्भीय जल तथा खेती के अनुकूल जलवायु उपलब्ध है। कृषि की उन्नत तकनीकी किसानों को हस्तानांतरित करने के लिए कृषि वैज्ञानिकों एवं कृषि प्रसार पदाधिकारियों/कर्मियों को संयुक्त रूप से गाँव में जाकर किसानों के बीच प्रचार–प्रसार एवं जागरूकता किये जाने एवं नवीनतम तकनीकी के प्रयोग के बारे में बताया जाता है तथा एल0ई0डी0 युक्त किसान जागरूकता वाहनों के माध्यम से राज्य के प्रत्येक प्रखंड अंतर्गत ग्राम पंचायतों में कृषि विभाग की योजनाओं एवं नवीनतम तकनीकी का प्रचार–प्रसार कराये जाने के लिए कृषि एवं कृषि से सम्बद्ध क्षेत्र के विषय पर आधारित तकनीकी चलचित्र किसानों को दिखाकर जागरूक किया जाता है।

किसान चौपाल में कृषि विभाग अंतर्गत योजनाओं में विभिन्न फसलों, फल, फूल, सब्जी आदि से संबंधित क्लस्टर में किये जा रहे खेती करने वाले किसानों को योजनाओं एवं नवीनतम तकनीकी पर बल देते हुए फसलों की उत्पादकता में वृद्धि के साथ–साथ विपणन समस्याओं के समाधान कर उनकी आमदनी बढ़ाने का भी सुझाव दिया जाता है। फसल अवशेष जलाने से मिट्टी के पोषक तत्वों की क्षति होने के साथ–साथ मिट्टी में कार्बनिक पदार्थों की भी क्षति होती है। फसल अवशेष को न जलाने तथा इसके प्रबंधन से संबंधित यंत्रों के प्रयोग के बारे में भी किसानों को बताया जाता है जिससे किसान इसका अधिक–से–अधिक लाभ उठा सकें।

चतुर्थ कृषि रोड मैप के विभिन्न आयामों का प्रचार–प्रसार एवं कृषि विभाग द्वारा संचालित सभी योजनाओं

की जानकारी हेतु वित्तीय वर्ष 2024–25 में चतुर्थ कृषि रोड मैप के अंतर्गत किसान चौपाल कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए राज्य स्कीम मद से कुल 613ण्0218 लाख रूपया (छः करोड़ तेरह लाख दो हजार एक सौ अस्सी) रूपये मात्र की स्वीकृति दी गई है इस योजना का कार्यान्वयन राज्य स्तर पर बामेती एवं जिला स्तर पर कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंध अभिकरण (आत्मा) के द्वारा किया जाता है।

किसान चौपाल कार्यक्रम का मुख्य आयाम-

- कृषि विभाग द्वारा संचालित कार्यक्रमों को किसानों तक पहुँचाना।
- कृषि क्षेत्र में किसानों के समस्याओं की जानकारी प्राप्त करना एवं उनके समस्याओं का समाधान करना।
- जल–जीवन–हरियाली योजना का विधिवत प्रचार–प्रसार किया जाना।
- फसल अवशेष प्रबंधन हेतु किसानों के बीच पराली नहीं जलाने के संबंध में जागरूकता।
- फसल विविधीकरण एवं मोटे अनोज (मिलेट्स) को बढ़ावा दिए जाने के बारे में किसानों को जानकारी उपलब्ध कराना।
- कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र में नवीनतम तकनीकी जानकारी कृषि वैज्ञानिकों/विशेषज्ञों एवं प्रसार पदाधिकारियों के माध्यम से किसानों के बीच पहुँचाना।
- कृषि विभाग अंतर्गत योजनाओं में विभिन्न फसलों, फल, फूल, सब्जी आदि से संबंधित क्लस्टर में किये जा रहे खेती करने वाले किसानों को योजनाओं एवं नवीनतम तकनीकी की जानकारी दिये जाने तथा विभिन्न फसलों की उत्पादकता में वृद्धि के साथ–साथ विपणन समस्याओं का समाधान।
- विभिन्न फसलों के उत्पादकता एवं उत्पादन बढ़ाने के लिए मिट्टी जाँच के आधार पर संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग, समय से फसल की बुवाई, फफुँदनाशी एवं कीटनाशी से बीजोपचार, सिंचाई के लिए जल प्रबंधन, खरपतवार नियंत्रण, दीमक एवं चूहा नियंत्रण, समेकित कीट प्रबंधन तथा समेकित पोषक तत्व प्रबंधन आदि के बारे में किसानों को जानकारी उपलब्ध कराना।
- कृषि विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं/कार्यक्रमों के संबंध में किसानों को जानकारी देना तथा किसानों से ऑन–लाईन आवेदन कराया जाना।
- बागवानी फसलों विशेषकर सब्जियों के जैविक उत्पादन पर विशेष रूप से किसानों को प्रोत्साहित करना।
- खरीफ मौसम में लगाये जाने वाले फसलों में कीट व्याधि का नियंत्रण एवं प्रबंधन से संबंधित जानकारी उपलब्ध कराना।
- इस कार्यक्रम में अधिक से अधिक महिलाओं की सहभागिता सुनिश्चित करना।

मोहगनी के पौधे को बनाएं आमदनी का स्रोत

स्वाती सागर
सहायक निदेशक (शष्य), पटना

आमतौर पर किसान अपने खेतों के किनारे यूकेलिप्टिस के पेड़ लगाते हैं। जो 5 साल में तैयार हो जाते हैं। लेकिन अगर महोगनी अपने खेत किनारे के पेड़ लगा दें तो यह 10 से 12 साल में तैयार हो जाते हैं। एक पेड़ की कीमत 40 से 50 हजार रुपए तक होती है। किसान पारंपरिक खेती को छोड़कर नई तरह की फसलों की ओर रुख कर रहे हैं। किसान औषधीय खेती के साथ–साथ अब बागवानी भी कर रहे हैं। जिससे उनको अच्छी आमदनी होती है। ऐसे में अगर किसान महोगनी के पौधों को खेतों में लगा दें तो वह 10 से 12 साल में मालामाल हो जाएंगे। महोगनी की लकड़ी बेहद ही कीमती होती है। महोगनी की लकड़ी की विदेश में भी भारी डिमांड रहती है। महोगनी की लकड़ियों का इस्तेमाल जहाज, फर्नीचर, प्लाईवुड, सजावट और मूर्तियों को बनाने में किया जाता है। खास बात ये है कि महोगनी की लकड़ी को पानी से कोई नुकसान नहीं होता है। इस लकड़ी से बने प्रोडक्ट कई वर्षों तक खराब नहीं होते हैं। जानकारों का कहना है कि महोगनी के पौधे को किसान अपने खेत किनारे भी लगा सकते हैं। पौधे लगाने के लिए पौधे से पौधे की दूरी 7 से 8 फीट रखी जाती है। आमतौर में यह पौधा नर्सरी पर 50 से 70 रूपए तक मिल जाता है। यह किसी भी जलवायु में तैयार किया जा सकता है।

किसी भी मिट्टी में लगा सकते हैं महोगनी

महोगनी के पेड़ों को बर्फबारी वाले इलाकों को छोड़कर किसी भी जलवायु में तैयार किया जा सकता है। इसको किसी भी तरह की मिट्टी में लगा सकते हैं। लेकिन अगर इसको दोमट मिट्टी में लगाया जाए तो यह और भी बेहतर विकास करता है। महोगनी का पौधा 50 फीट से लेकर 150 फीट की ऊंचाई तक चला जाता है।

बड़े काम की महोगनी की लकड़ी, छाल और पत्तियां

जानकारों का कहना है कि महोगनी एक ऐसा पौधा है। जिसकी लकड़ी, छाल और पत्तियां भी बेहद काम की होती हैं। महोगनी के बीज का तेल निकालकर उससे मच्छर भगाने वाले उत्पादक और कीटनाशकों में इस्तेमाल किया जाता है। इसके पत्तों और इस छाल का इस्तेमाल कई तरीके की औषधियों को तैयार करने में भी किया जाता है।

पपीते की खेती से गुरु दयाल कर रहे कमाई

बांका जिला के अमरपुर प्रखंड अंतर्गत कल्याणपुर गांव निवासी गुरु दयाल कापड़ी पारंपरिक फसलों से हटकर पपीते की खेती कर रहे हैं। पहले उन्होंने एक बीघा में पपीते की खेती की, जिसमें अच्छा मुनाफा होने के बाद अब वह पांच बीघा में पपीता की खेती कर रहे हैं। किसान गुरु दयाल कापड़ी कहना हैं कि किसान बहुत आसानी से पपीते की खेती कर सकते हैं इसमें कम लागत में अच्छा मुनाफा होता है। पपीते की खेती से हमने पिछले दो साल में लाखों का मुनाफा कमाया है। किसान गुरु दयाल कापड़ी ने कहा कि किसान बहुत आसानी से पपीते की खेती कर सकते हैं इसमें कम लागत में अच्छा मुनाफा होता है। पपीते का एक पेड़ पर करीब 90 किलो से 100 किलो तक फल का उत्पादन होता है और इसकी कीमत भी बाजार में आमतौर पर 40 से 50 रुपए प्रति किलो होती है। इसके चलते मार्केट में व्यापारियों के द्वारा अच्छे रेट मिल जाते हैं।

दयाल कापड़ी का कहना है कि अमीना वैरायटी के पपीते की क्वालिटी काफी अच्छी होती है। सबसे बड़ी बात यह है कि इस वैरायटी में बीमारियां नहीं लगती है। अमूमन पपीता के पेड़ में बीमारी लग जाने से किसानों को भारी नुकसान हो जाता है। अमीना वैरायटी के पपीते में बीमारियों की संभावना न के बराबर होती है। इसका साइज भी सुडौल होता है और खाने में भी बेहद स्वादिष्ट लगता है। इस बार अनुमान है कि पपीते की खेती से अच्छी कमाई हो जाएगी। उन्होंने बताया कि एक पौधे की कीमत 70 रुपए पड़ जाती है। इसे तैयार करने में 150 रुपए तक खर्च हो जाता है। वहीं 60 से 65 दिनों में फलन शुरू हो जाता है।

घर में मछली पालन करने के लिए सरकार देगी सब्सिडी

अब घर में भी मछली पालन किया जा सकता है। इसके लिए सरकार 60 फीसदी तक सब्सिडी मुहैया करवा रही है। मछली पालन में व्यवसाय का एक अच्छा तरीका है। किसान बड़े पैमाने पर मछली पालन करते हैं। आमतौर पर मछली पालन तालाब और नदी के किनारे किया जाता है। लेकिन अब इसमें बदलाव आया है। किसान कहीं भी मछली का पालन बड़ी ही सुविधा के साथ कर सकते हैं। केंद्र सरकार की योजना इसमें आपका योगदान देगी। केंद्र सरकार ने बैकयार्ड रिसर्कुलेटरी एक्वाकल्चर सिस्टम योजना लागू की है। जिसके तहत आम जनता को मछली पालन पर 40 फीसदी की सब्सिडी दी जा रही है। तो वहीं जो महिलाएं अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के अंतर्गत आती हैं। उन्हें इस पर 60 फीसदी की सब्सिडी जा रही है। घर में मछली पालन करना चाहते हैं। एक सीमेंट टैंक होना चाहिए। इसमें भी आप मछली पालन आसानी से कर सकते हैं। इसमें तकरीबन 70 से 80 किलोग्राम मछली आराम से रखी जा सकती है। सरकार ने छोटे मछुआरों को सहायता देने के लिए बैकयार्ड रिसर्कुलेटरी एक्वाकल्चर सिस्टम के जरिए मछली पालन की यह योजना चलाई है। अगर किसान के पास दो कमरों का घर है तो वह एक कमरे में मछली पालन कर सकता है। तो वहीं दूसरे के बारे में अपने परिवार के साथ रह सकता है । सीमेंट टैंक के साथ ही किसान प्लास्टिक टैंक में भी मछली का पालन कर सकते हैं। इस टैंक में भी सीमेंट टैंक की तरह ही मछलियां पाली जा सकती है। इसमें सिंघी मछली के बीज डाले जा सकते हैं। जो कि चार महीनों के भीतर ही 100 ग्राम की एक मछली के रूप में तैयार हो जाएंगे। एक टैंक से तकरीबन 2 लाख रूपये तक कमाये जा सकते हैं

पशुओं के पेट में भी होते हैं कीड़े लक्षण और बचाव के उपाय

पशुपालकों की जिंदगी में जानवरों का अहम योगदान होता है। उनकी रोजी–रोटी में यह आर्थिक सहायता प्रदान करते हैं। ऐसे में उन्हें जानवरों का खास ख्याल रखना होता है। पशुओं के पेट में कीड़े होना काफी आम बात है, लेकिन इसका समय रहते उपचार न कराना घातक साबित हो सकता है। ऐसे में पशुपालकों को इसकी सही जानकारी होना जरूरी है। पशुओं के पेट में कीड़े पड़ना एक सामान्य बीमारी है, लेकिन अगर इसका समय रहते इलाज नहीं किया गया तो ये काफी गंभीर साबित हो सकता है। इस दौरान जानवर कुछ खाते–पीते हैं तो इसका फायदा पशुओं में नजर नहीं आता क्योंकि जानवरों के पेट में गए भोजन का बड़ा हिस्सा कीड़े

चट कर जाते हैं। इससे जानवरों के स्वास्थ्य पर काफी बुरा असर होता है। वहीं, पशुपालकों को भी आर्थिक नुकसान से गुजरना पड़ता है। जानवरों के पेट में कीड़े की समस्या को जल्द से जल्द पहचान करने की जरूरत है। इससे नुकसान को 30 से 40 फीसदी तक कम किया जा सकता है। आइए जानते हैं इसके लक्षण और बचाव के उपाय। जानवर मिट्टी खाने लगे, या कमजोर दिखाई दे तो ये पेट में कीड़े होने का लक्षण है। वहीं, कीड़े लगने के कारण उससे मटमैले रंग का बदबूदार दस्त आता है। कई बार गोबर से काला खून या इसमें कीड़े भी दिखते हैं। इस दौरान पशु में खून की कमी होने लगती है। साथ ही दुधारु पशु दूध भी कम देने लगते हैं। पशुओं को पेट में कीड़े होने की समय रहते पहचान करके उपचार करना चाहिए। इसके लिए हर तीन महीने में पशुओं को डीवेरमैक्स की दवा दें। लेकिन दवाई खिलाने से पहले गोबर की जांच कराएं। उनको वैक्सीनेशन कराने से पहले आंत के कीड़ों की दवाई जरूर दें। टीकाकरण कराने के बाद कोई दवा न दें। जानवरों को हमेशा शुद्ध चारा एवं दाना खिलाना चाहिए।

दुनिया की सबसे छोटी गाय, दूध में होती है खूबियां

गाय दिखने में ही छोटी है, लेकिन इसकी खूबियां बाकी नस्लों से काफी अलग है। इस नस्ल की गाय का दूध भी काफी अच्छा रहता है। छोटा कद होने के चलते इस रख–रखाव में भी आसानी रहती है। देश में गाय की 50 देसी नस्लें हैं, जिनकी अपनी खासियत होती है। इन्हीं में शामिल है पुंगनूर गाय, जो अपने छोटे कद के लिए दुनियाभर मशहूर है। आंध्र प्रदेश में इसके संरक्षण का काम चल रहा है। देश के कोने– कोने से लोग आज लोग ना सिर्फ इस गाय को देखने आते हैं, बल्कि इसे खरीदकर भी ले जाते हैं। ये गाय दिखने में ही छोटी है, लेकिन इसकी खूबियां बाकी नस्लों से काफी अलग है। इस नस्ल की गाय का दूध भी काफी अच्छा रहता है। विलुप्ति की कगार पर खड़ी भारतीय नस्ल की पुंगनूर गाय मूलरूप से आंध्र प्रदेश से ही ताल्लुक रखती है। यहां पूर्वी गोदावरी जिले के लिंगमपट्टी गांव में 4 एकड़ में फैली एक गौशाला में पुंगनूर गाय का संरक्षण–संवर्धन किया जा रहा है। इस गौशाला में आज करीब 300 की संख्या में पुंगनूर नस्ल की गाय है। इस

गौशाला के मालिक कृष्णम राजू ने 15 साल के पहले पुंगनूर गाय खरीदी थी। गुंटूर के एक सरकारी फार्म पर इसका कृत्रिम गर्भाधान भी करवाया, जिसके बाद इनकी संख्या में भी वृद्धि हो गया। पुंगनूर गाय जितनी छोटी होती है, इसकी कीमत उतनी ही अधिक होगी। आमतौर पर पुंगनूर गाय को जोड़ा 1 लाख से 25 लाख तक में बिकता है।

बेहद फायदेमंद है इसका दूध

पुंगनूर गाय मूल स्थान दक्षिण भारत ही है। ये आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में पायी जाती है। यहां के पुंगनूर के स्थान पर ही इस गाय का नाम रखा गया है। इस गाय का दूध 8 प्रतिशत वसा के साथ औषधीय गुणों से भी भरपूर होता है, जबकि सामान्य गाय के दूध में 3 से 3.5 प्रतिशत तक ही वसा मिलता है। छोटे कद वाली पुंगनूर गाय प्रतिदिन 3 से 5 लीटर दूध देती है, जिसकी एवज में सिर्फ 5 किलो चारा डालना होता है। ये नस्ल सूखा प्रतिरोधी भी है, जिसके चलते दक्षिण भारत के साथ–साथ दिल्ली, यूपी, बिहार गुजरात, राजस्थान और मध्य प्रदेश के तमाम इलाकों के लिए अनुकूल है।

रितेश गन्ने की खोई से कप का कर रहा कारोबार

बिहार के नवगछिया के रहने वाले रितेश गन्ने की खोई से बड़े पैमाने पर कप, प्लेट और कटोरी बनाते हैं। रितेश गन्ने के वेस्ट को प्रोसेस करते हैं और इससे वह इको फ्रेंडली सामान बनाते हैं। इस कारोबार से वे लाखों कमा रहे हैं। भारत में हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र जैसे राज्यों के बाद बिहार में भी गन्ने की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है। गन्ने से रस निकाल लेते हैं, लेकिन उसकी खोई यूं ही बर्बाद हो जाती है। वहीं कई लोग इसे खेतों में ही जला देते हैं, जिससे काफी प्रदूषण फैलता है। बिहार सहित मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश और उड़ीसा जैसे राज्यों में भी फैला हुआ है। सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगते ही बाजार फिर से खुद को नई व्यवस्था के अनुरूप ढालने लगा है। बाजार में फिलहाल डिस्पोजेबल थाली, प्लेट, कटोरा इत्यादि उत्पाद ज्यादा मिलते हैं। गन्ने की खोई से बने उत्पाद खूबसूरत और टिकाऊ होने के कारण ग्राहक अधिक पसंद करते हैं। वहीं ग्राहक भी सिंगल यूज प्लास्टिक के विकल्प के तौर पर नए उत्पाद खरीदना पसंद कर रहे हैं। रितेश का कहना है कि गन्ने के खोई, केले थंब, धान की भूसे और सब्जी एवं फलों के वेस्ट से वो कप बनाते है। इसमें किसी प्रकार का कोई केमिकल उपयोग नहीं होता है। उन्होंने कृषि विश्वविद्यालय सबौर से इंटर की पढ़ाई एग्रीकल्चर से की है और वो एग्रीकल्चर में हीं अपना भविष्य आजमाना चाहते थे, लेकिन फिर पारिवारिक दिक्कतों के कारण स्नातक में आर्ट्स लेना पड़ा था। उसके बाद यूट्यूब से वीडियो देखकर इस उद्योग को शुरू करने की इच्छा हुई और इस उद्योग को शुरू किए हुए 3 महीने हो चुके हैं। वहीं इसका बाजार में बहुत अच्छा रिस्पांस मिल रहा है और लोग इसको पसंद भी कर रहे हैं। खासतौर पर जो शुगर के मरीज हैं, वे इसे ज्यादा पसंद कर रहे है, क्योंकि गन्ने के खोई से बने कप में चाय में हल्की मिठास का अनुभव होता है। रितेश ने बताया कि उन्होंने मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना से 6 लाख रुपये का लोन लेकर काम की शुरुआत की थी। अभी उनके उद्योग में उनकी मां पूरा सहयोग कर रही हैं।

सोयाबीन की खेती से किसान को अच्छा मुनाफा

सोयाबीन खाने में स्वादिष्ट होने के साथ सेहत के लिए फायदेमंद होते हैं। सोयाबीन की खेती कर किसान हर साल लाखों का मुनाफा कमा सकते हैं। सोयाबीन सेहत के लिए भी काफी फायदेमंद मानी गई है। यह कैल्शियम की कमी को पूरा करने में काफी मदद करती है, अधिकतर जिम ट्रेनर लोगों को सोयाबीन खाने के लिए कहते हैं, ताकि शरीर स्वस्थ रहे, जिस वजह से बाजार में सोयाबीन की काफी डिमांड रहती है।

सोयाबीन की खेती

सोयाबीन को गोल्डन बीन के नाम से भी जाना जाता है। सोयाबीन भारत में एक महत्वपूर्ण फसल के रूप में जानी जाती है। ऐसे में किसान इसकी खेती कर बंपर मुनाफा कमा सकते हैं। कई बार बारिश नहीं होने की वजह से फसल बर्बाद हो जाती है, जिससे किसानों को भारी नुकसान झेलना पड़ता है। ऐसे में किसान सोयाबीन की खेती कर सकते हैं, इसकी खेती करने पर आपको किसी प्रकार का नुकसान नहीं होगा।

हर साल होगा तगड़ा मुनाफा

किसान सोयाबीन की फसल को कम पानी और कम जमीन में आसानी से उगा सकते हैं। इससे वे हर साल तगड़ा मुनाफा भी कमा सकते हैं। बता दें कि किसान को एक हेक्टेयर में 25 से 30 क्विंटल का उत्पादन होता है। इससे किसान हर साल लाखों का मुनाफा कमा सकता है और अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत कर सकता है।

सोयाबीन के बीज की बुवाई

सोयाबीन के बीज लगाने का सही समय बरसात के मौसम की पहली बारिश यानी मई और जून के बीच का होता है। इस समय में आप सोयाबीन के बीज अपने खेत में लगा सकते हैं, बस ध्यान रहे जब भी आप खेत में बीज लगाएं, तब खेत में पानी भरा हुआ नहीं होना चाहिए। जब भी आप खेत में सोयाबीन के बीज की बुवाई करें, तब पौधे की दूरी कम से कम 5 से 10 सेंटीमीटर होनी चाहिए।

सोयाबीन की वैरायटी

ऐसा करने से पौधों को भरपूर पोषण मिलता है और सोयाबीन का उत्पादन बेहतर होता है। इसकी खेती करने के लिए आप अलग–अलग सोयाबीन की किस्मों का चुनाव कर सकते हैं। जैसे JS 335, MSC 252, JS 9308, JS 2095, JS 2036 आदि वैरायटी शामिल है। आप इनमें से किसी भी वैरायटी के सोयाबीन को अपने खेत में लगाकर आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

यूरिया का उपयोग

सोयाबीन की खेती के दौरान किसान को यूरिया का उपयोग तीन बार थोड़ी–थोड़ी मात्रा में करना चाहिए। आप एक हेक्टेयर में बुवाई के टाइम कम से कम 12 से 15 किलो तक यूरिया का छिड़काव कर सकते हैं। इसके बाद जब पौधे के विकास का वक्त आए, तब आप 25 से 30 किलो यूरिया का इस्तेमाल करें। जब पौधे में फूल आने लगे तब आप 40 से 50 किलो यूरिया का इस्तेमाल कर सकते हैं। ऐसे तीन बार आप यूरिया का इस्तेमाल करें।

कृषि के विस्तार में सोशल मीडिया की भूमिका

बिनीता सतपथी', साक्षी पुंडीर
सह–प्राध्यापक और विभागाध्यक्ष, एमएससी. विद्यार्थी
डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर, बिहार

"सोशल मीडिया समय पर सूचना, शिक्षा और सामुदायिक समर्थन के साथ किसानों को सशक्त बनाकर कृषि विस्तार सेवाओं में क्रांति ला रहा है। फेसबुक, व्हाट्सएप और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म सर्वोत्तम कृषि पद्धतियों पर वेबिनार और ट्यूटोरियल की मेजबानी करते हुए मौसम, कीटों के प्रकोप और बाजार की कीमतों पर वास्तविक समय पर अपडेट प्रदान करते हैं। ज्ञान केंद्रों और कृषक समुदायों के बीच अंतर को पाटने में महत्वपूर्ण भूमिका। विस्तार सेवाएँ पहले व्यक्तिगत बैठकों, लिखित सामग्री और रेडियो पर निर्भर थीं, जो ज्ञान को साझा करने और किसानों को उनके तरीकों में सुधार करने में मदद करते थे।"

भारत में किसानों का सोशल मीडिया का उपयोग दोगुना हो गया है, जिसमें यूट्यूब, इंस्टाग्राम और WhatsApp जैसे प्लेटफॉर्म आम हैं। ये प्लेटफॉर्म पीयर–टू–पीयर लर्निंग को बढ़ावा देते हैं और नेटवर्क का समर्थन करते हैं, जिससे किसान अनुभव और समाधान साझा करने में सक्षम होते हैं। सोशल मीडिया प्रत्यक्ष विपणन, किसानों को उपभोक्ताओं से जोड़ने और बाजार पहुंच बढ़ाने की सुविधा भी देता है। इसके अतिरिक्त, यह नीतिगत वकालत के लिए किसानों की आवाज को बढ़ाता है और नवीन कृषि प्रौद्योगिकियों को अपनाने के लिए प्रेरित करता है। हालाँकि, इसके प्रभाव को अधिकतम करने के लिए, डिजिटल विभाजन, सामग्री की गुणवत्ता और भाषा बाधाओं जैसी चुनौतियों का समाधान किया जाना चाहिए। लेकिन सोशल मीडिया के आगमन ने सेवाओं के काम करने के तरीके को पूरी तरह से बदल दिया है, जिससे बातचीत, सहयोग और ज्ञान के हस्तांतरण के पहले कभी नहीं देखे गए अवसर उपलब्ध हुए हैं। हम इस भाग में सोशल मीडिया के विस्तार पर क्रांतिकारी प्रभावों का विश्लेषण करेंगे, साथ ही इन प्लेटफॉर्मों द्वारा किसानों को सशक्त बनाने, वैश्विक कृषि प्रणालियों की स्थिरता का समर्थन करने और आउटरीच को सक्षम करने के तरीकों को भी देखेंगे। जैसे–जैसे प्रौद्योगिकी विकसित होती जाती है, सोशल मीडिया तेजी से किसानों को सशक्त बनाने और कृषि क्षेत्र को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। सोशल मीडिया पैठ डिजिटल 2020 के अनुसार विश्व भर में 5.2 बिलियन मोबाइल फोन उपयोगकर्ता हैं और 4.66 बिलियन इंटरनेट उपयोगकर्ता हैं। कुल 4.14 बिलियन लोगों में से 53.00 प्रतिशत सक्रिय सोशल मीडिया उपयोगकर्ता हैं। दैनिक रूप से विश्व भर में 10 अरब घंटे सोशल मीडिया पर बिताए जाते हैं, जबकि एक सामान्य सक्रिय उपयोगकर्ता विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर 29 घंटे बिताता है। इसके अलावा, लगभग 20 प्रतिशत सोशल मीडिया उपयोगकर्ता डेस्कटॉप (लैपटॉप भी शामिल) का उपयोग करते हैं, जबकि ९६ प्रतिशत मोबाइल का उपयोग करते हैं। भारत में लगभग 1.3 अरब लोगों का लगभग 1.06 अरब मोबाइल फोन उपयोगकर्ता है। जिसमें से भारत में 687 मिलियन सक्रिय इंटरनेट उपयोगकर्ता थे, जिनमें से 355 मिलियन ग्रामीण भारत में थे.

सामाजिक मीडिया

"सोशल मीडिया" शब्द ऑनलाइन समुदायों और नेटवर्क का वर्णन करता है जो लोगों को विचारों, सामग्री और सूचनाओं का निर्माण, साझाकरण और आदान–प्रदान करने की सुविधा देते हैं। ये प्लेटफॉर्म लोगों को जुड़ाव, संचार और सहयोग करने में सक्षम बनाते हैं, जिसमें टेक्स्ट, फोटो, वीडियो और ऑडियो शामिल हैं।

1. **ट्विटरः** ट्विटर पर उपयोगकर्ता एक छोटा सा संदेश पोस्ट कर सकते हैं जिसे ट्वीट कहते हैं। कृषि विस्तार पेशेवरों और व्यापक दर्शकों तक पहुंचने के लिए उपयुक्त हैशटैग का उपयोग करना. ट्विटर का उपयोग करके कृषि समाचार, मौसम, बाजार दरें और अन्य विषयों पर तत्काल अपडेट साझा करें।
2. **व्हाट्सएप** : व्हाट्सएप एक मैसेजिंग ऐप है जो लोगों को वॉयस नोट्स और चित्र भेजता है। वीडियो साथ ही पाठ संदेश। किसानों से बातचीत करने के लिए शैक्षिक आदान–प्रदानरू संसाधन, सलाहकार सेवाएँ, और सहकर्मी– से– सहकर्मी सीखने और ज्ञान को बढ़ावा देना
   व्हाट्सएप समूह बनाकर साझाकरण और विस्तार करने वाले एजेंटों को स्थापित करें
3. **फेसबुक** : फेसबुक एक कृषि उपकरण है जिसका उपयोग अनुसंधान करने, कृषि समूहों को बनाने, लाइव सत्रों को आयोजित करने और सामग्री को वितरित करने के लिए करता है।
4. **इंस्टाग्राम** : इंस्टाग्राम एक विजुअल सोशल मीडिया साइट है जहां लोग वीडियो साझा कर सकते हैं। इंस्टाग्राम एक ऐसा उपकरण है जिसका उपयोग कृषि क्षेत्र में विस्तार करने के लिए किया जाता हैय यह सफलता की कहानियों को प्रसारित करता है, कृषि तकनीकों पर प्रकाश डालता है, कृषि उत्पादों का विज्ञापन करता है, और आकर्षक सामग्री के माध्यम से अपने अनुयायियों से जुड़ता है।
5. **टेलीग्राम** : टेलीग्राम मैसेजिंग ऐप ग्रुप चौट और सुरक्षा उपायों के लिए प्रसिद्ध है। खासकर जगहों में जहां व्हाट्सएप को

प्रतिबंधित किया जा सकता है। कृषि विस्तार एजेंसियां चर्चा समूहों, मल्टीमीडिया जानकारी, प्रशिक्षण सत्रों और किसानों के लिए प्रस्तावों का उपयोग करती हैं।

सलाहकार से सहायता.

6. **यूट्यूब** : यूट्यूब निर्देशात्मक वीडियो उपलब्ध कराने के लिए एक अच्छा साधन है।
यह वीडियो साझा करने का मंच प्रदान करता है, इसलिए ट्यूटोरियल और कृषि तकनीकों का प्रदर्शन। विस्तार एजेंटों ने विभिन्न शिक्षण शैलियों को अनुकूलित करने के लिए एक यूट्यूब चौनल बनाया, जहां वे गाइड, विशेषज्ञ साक्षात्कार और वर्चुअल क्षेत्र यात्राएं प्रदान करते हैं
7. **लिंक्डइन** : लिंक्डइन एक प्रोफेशनल नेटवर्किंग साइट है जो बिजनेस और करियर विकास की जानकारी प्रदान करता है। विस्तार एजेंटों और कृषि पेशेवर क्षेत्र के अन्य लोगों के साथ नेटवर्क बनाने, लिंक्डइन का उपयोग करके उद्योग अंतर्दृष्टि प्राप्त करें, वाद–विवाद में भाग लें, और प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों और नौकरी के अवसरों की खोज करें।

सोशल मीडिया किसानों के सशक्तिकरण में कैसे योगदान देता है

1. **कृषि ज्ञान का प्रसार** :

i) लाभकारी प्रशिक्षणरू किसानों को कृषि ज्ञान का प्रसार करने का एक सस्ता तरीका फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप और यूट्यूब जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म देते हैं। विस्तार कार्यकर्ता व्यापक दर्शकों तक पहुंचने वाली सूचनात्मक सामग्री बना और साझा कर सकते हैं, जिसमें वीडियो, लेख और इन्फोग्राफिक्स शामिल हैं।

ii) वास्तविक समय की सूचनारू सोशल मीडिया से किसान वास्तविक समय में फसल प्रबंधन, कीट नियंत्रण, मौसम अपडेट और बाजार रुझान पर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इससे उन्हें सूचित निर्णय लेने में आसानी होती है।

2. **व्यापार में पहुंच और बिक्री** :

i) प्रत्यक्ष विपणन : सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से कई प्रगतिशील किसान सीधे ग्राहकों को अपने उत्पादों को बेचते हैं। वे बिचौलियों के बिना खरीदारों को आकर्षित कर सकते हैं, सिर्फ अपनी उत्पादों का प्रदर्शन करके।

ii) सामुदायिक समर्थित कृषि (CSA) : सोशल मीडिया के माध्यम से किसानों को सीएसए मॉडल को बढ़ावा देने में सक्षम बनाया जा सकता है, जहां उपभोक्ता सीधे खेत से खरीदा जाता है। इससे उपभोक्ता–किसान संबंध मजबूत होते हैं।

3. **विस्तार एजेंटों से संपर्क** :

i) सीधी बातचीत : कृषक सोशल मीडिया के माध्यम से विशेषज्ञों और एजेंटों से सीधे संपर्क कर सकते हैं। वे सलाह ले सकते हैं, प्रश्न पूछ सकते हैं और अपनी चुनौतियों का तुरंत समाधान पा सकते हैं।

ii) सामुदायिक इमारतें : सोशल मीडिया के माध्यम से किसानों को दूसरे किसानों से जुड़ने और आभासी समुदाय बनाने की अनुमति मिलती है, जहां वे एक–दूसरे से सीख सकते हैं, अनुभव साझा कर सकते हैं और सहयोग कर सकते हैं।

4. **विस्तार सेवाओं का विस्तार** :

i) अन्तरक्रियात्मक संचार : किसानों के साथ अधिक प्रभावी ढंग से जुड़ने के लिए विस्तार कार्यकर्ता सोशल मीडिया प्लेटफार्मों की इंटरैक्टिव प्रकृति का लाभ उठा सकते हैं। वे व्यक्तिगत सलाह दे सकते हैं, प्रश्नों का समाधान कर सकते हैं और समय पर जानकारी दे सकते हैं।

ii) स्थिरता और प्रतिभा : दुनिया भर में कृषि प्रणालियों की स्थिरता और लचीलेपन में सोशल मीडिया की विस्तार सेवाओं का योगदान मिलता है

कृषि विस्तार में सोशल मीडिया का लाभप्रद उपयोग किया जा सकता है, जैसा कि नीचे चर्चा की गई है (सरवनन एट. अल., 2015)

1. बहुत कम लागत
2. एक साथ बहुत सारे ग्राहकों को लाता है
3. मोबाइल फोन से आसानी से प्राप्त करें
4. संगठनों की इंटरनेट उपस्थिति और ग्राहक पहुंच का विस्तार
5. स्थान और ग्राहक विशिष्ट, समस्याग्रस्त
6. सभी को सूचना मुहैया कराना और उसे लोकतंत्रीकरण करना
7. हितधारकों को एक मंच पर एकत्र करता है
8. दर्शकों, मित्रों, अनुयायियों और उल्लेखों को ट्रैक करके पहुंच और सफलता का आकलन कर सकते हैं। फेसबुक वार्तालाप सूचकांक, शेयरों की संख्या और ष्लाइकष
9. उपयोगकर्ता–जनित सामग्री और समुदाय की चर्चा

निष्कर्ष

सस्ते मोबाइल डेटा और स्मार्टफोन क्रांति ने सोशल मीडिया को देश के अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचाया है। इसने किसानों को अभिव्यक्ति का एक साधन दिया है। सोशल मीडिया के माध्यम से व्यवसायों को वास्तविक समय में वैज्ञानिकों से जुड़ने और उनकी समस्याओं को हल करने के साथ–साथ ग्राहकों को अपने उत्पादों को बढ़ावा देने का मौका मिलता है। अब किसानों को केवीके, विश्वविद्यालय या कृषि विभाग द्वारा चलाए जा रहे विस्तार कार्यक्रमों या पारंपरिक मीडिया आउटलेटों पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं हैय इसके बजाय, वे अपनी हथेली में मौजूद एक छोटे उपकरण से अपनी सारी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। शारीरिक दूरी का सिद्धांत बेकार हो गया है, खासकर ग्रामीण भारत में सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं की बढ़ती संख्या के कारण साथ, यह शक्तिशाली उपकरण है!

जलवायु परिवर्तन को दूर करने में कार्बन फार्मिंग की भूमिका

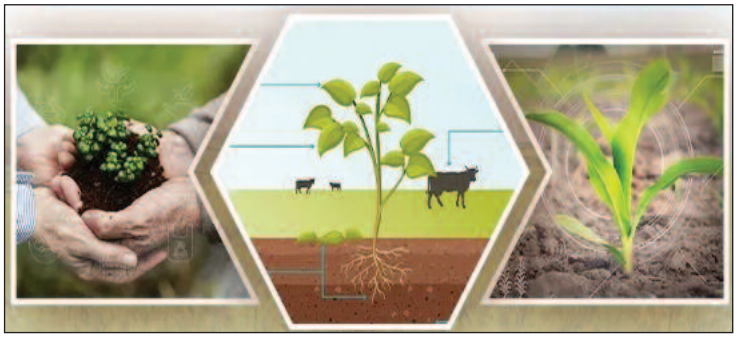

कार्बन खेती (जिसे कार्बन पृथक्करण के रूप में भी जाना जाता है) कृषि प्रबंधन की एक प्रणाली है जो भूमि को अधिक कार्बन संग्रहीत करने और वायुमंडल में छोड़ी जाने वाली ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा को कम करने में मदद करती है। सतत वन प्रबंधन प्रथाएं ग्रीनहाउस गैसों को कम करके और लकड़ी में कार्बन डाइऑक्साइड जमा करके समान अच्छा काम करती हैं। जनजातीय राष्ट्र कई अलग–अलग तरीकों से ऐसा कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, भारतीय कृषि उत्पादक जलमार्गों के किनारे वृक्षों सहित वनस्पति के संरक्षण और पुनर्स्थापन के लिए अपनी चरागाह भूमि का प्रबंधन कर सकते हैं। यह अभ्यास भूमि को कार्बन जमा करने और वायुमंडल से ग्रीनहाउस गैसों को हटाने में मदद करता है, साथ ही आस–पास के जल स्रोतों को भी लाभ पहुंचाता है। भूमि मालिक उर्वरक कटौती की रणनीतियों को भी लागू कर सकते हैं, जैसे कि खाद या बायोचार (फसल की पैदावार में सुधार के लिए मिट्टी में इस्तेमाल होने वाला कोयला) लगाना, जो वनस्पति में बंधी ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा को कम करता है। कार्बन खेती कृषि प्रबंधन की एक प्रणाली है जो उन गैसों को वायुमंडल में छोड़ने के बजाय भूमि को अधिक ग्रीनहाउस गैसों को जमा करने और संग्रहीत करने में मदद करती है।

वन प्रबंध

स्वस्थ वन अन्य स्रोतों से उत्पन्न कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन को अवशोषित और धारण करते हैं और ग्रीनहाउस गैस (जीएचजी) पृथक्करण का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। कार्बन ऑफसेट विभिन्न प्रकार की रणनीतियों के माध्यम से बनाया जा सकता है जिनमें शामिल हैं। वनों की कटाई से बचना और स्थायी भूमि संरक्षण, पुनर्वनीकरण और पुनर्रोपण गतिविधियाँ, और कार्यशील जंगलों में जहां कटाई होती है, वन प्रबंधन और प्रबंधन में सुधार करना। बेहतर वन प्रबंधन दीर्घकालिक, टिकाऊ प्रथाओं पर ध्यान केंद्रित करता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वन वायुमंडल से ब्व्2 को हटाना जारी रखें क्योंकि वनों की कटाई जीएचजी स्तरों में वैश्विक वृद्धि का 15 से 20 प्रतिशत के बीच है। गतिविधियों में वनों को पतला करना, चयनात्मक कटाई, पुनर्जनन और रोपण, और उत्पादक और टिकाऊ वन विकास को सक्षम करने के लिए निषेचन शामिल है।

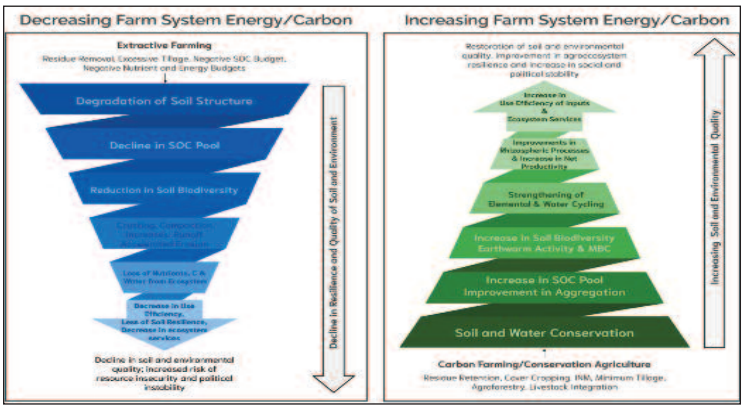

घास के मैदानों का संरक्षण

वानिकी के समान, देशी घास और अन्य वनस्पतियाँ ग्रीनहाउस गैस (जीएचजी) अवशोषण और पृथक्करण का एक प्राकृतिक स्रोत प्रदान करती हैं। इस श्रेणी के कार्बन ऑफसेट स्थायी भूमि संरक्षण के माध्यम से देशी पौधों के जीवन को बनाए रखने पर ध्यान केंद्रित करते हैं और वाणिज्यिक विकास या गहन कृषि के लिए रूपांतरण से बचते हैं।

नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन

पवन या सौर जैसी नवीकरणीय ऊर्जा सुविधाएं, पावर ग्रिड के भीतर जीवाश्म ईंधन–आधारित बिजली उत्पादन स्रोतों को विस्थापित करके कार्बन ऑफसेट उत्पन्न करती हैं। प्रमाणित तृतीय–पक्ष परियोजना से प्राप्त कार्बन ऑफसेट कार्बन क्रेडिट उत्पन्न करता है, जिसका स्वामित्व उस इकाई के पास होता है जो परियोजना विकसित करती है। उदाहरण के लिए, टोकसूक बे अलास्का नेटिव विंड परियोजना, जो डीजल–जनित बिजली को नवीकरणीय ऊर्जा से बदल देती है, का स्वामित्व और संचालन गैर–लाभकारी अलास्का विलेज इलेक्ट्रिक कोऑपरेटिव द्वारा किया जाता है।

जानें कार्बन फार्मिंग की खासियत, इससे कैसे बढ़ेगी किसानों की आय?

अत्यधिक कार्बन उत्सर्जन आज पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय बन चुका है, लेकिन कार्बन फार्मिंग (Carbon Farming) किसानों के लिए खेती से आय बढ़ाने के नए दरवाजे खोल रहा है। कार्बन फार्मिंग से किसान न सिर्फ अपनी

आय बढ़ा सकते हैं, बल्कि इससे अपनी मिट्टी की उर्वरता में भी बढ़ोतरी कर सकते हैं। यही वजह है कि अब दुनियाभर में इस खेती के प्रति किसान आकर्षित हो रहे हैं और कार्बन फार्मिंग का उपयोग कर अपनी आय बढ़ा रहे हैं। भारतीय किसानों के लिए भी यह एक बड़ा अवसर है, जहां देश दुनिया में कार्बन खेती से पैदा होने वाले ऑर्गेनिक उत्पादों की मांग बढ़ रही है वहीं भारतीय किसान इन मांगों को पूरा कर अच्छा खासा पैसा कमा सकते हैं। देखा जाए तो जैविक खेती से पैदा हुए उत्पादों के दाम भी दिनों–दिन बढ़ रहे हैं। जैविक उत्पादों की कीमतों में यह वृद्धि दुनियाभर में देखने को मिल रही है। लोग अपने स्वास्थ्य को बेहतर रखने के लिए जैविक उत्पादों को अपना रहे हैं।

कार्बन फार्मिंग (Carbon Farming) एक ऐसा तरीका है जिसमें किसान खेतों से होने वाले कार्बन उत्सर्जन को कम करते हैं और कृषि के माध्यम से मिट्टी में कार्बन की मात्रा को भी बढ़ाते हैं। इन दोनों प्रक्रिया को पूरा करना ही एक सफल कार्बन खेती माना जाता है। इस खेती के कई लाभ हैं जैसे यह वातावरण में ग्रीन हाउस गैस के उत्सर्जन को कम करता है, साथ ही मिट्टी को भी ज्यादा कार्बनिक बनाता है और मिट्टी की उत्पादकता को बेहतर बनाता है।

कार्बन फार्मिंग का महत्व?

कार्बन फार्मिंग के महत्व की बात करें तो आंकड़ों के माध्यम से हम इसे स्पष्ट करना चाहेंगे कि दुनिया भर में जितना भी ग्रीन हाउस गैस (CO_2) का उत्सर्जन होता है, उसमें एक तिहाई हिस्सा यानी 33% योगदान मिट्टी से उत्सर्जित कार्बन का होता है। यही वजह है कि दुनिया भर की सरकारें कार्बन फार्मिंग को बढ़ावा दे रही है ताकि कार्बन चक्र को संतुलित रखा जा सके। यह तो इसका पर्यावरणीय महत्व है लेकिन इस खेती से किसानों को शुद्ध और स्वच्छ कृषि उत्पाद मिलता है जो मार्केट में ज्यादा भाव में बिकता है। इसलिए इस खेती का इकोनॉमिक इंपैक्ट भी हैं।

कैसे करें कार्बन फार्मिंग?

कार्बन फार्मिंग करने के तरीके की बात करें तो किसानों के दृष्टिकोण से इसके कुछ मुख्य तरीकों की चर्चा हम आगे करेंगे। कार्बन फार्मिंग करने का पहला तरीका यह है कि मिट्टी की जुताई में कमी लाएं। जरूरत से ज्यादा गहरी जुताई कार्बन उत्सर्जन को बढ़ावा देता है। इससे मिट्टी के अंदर मौजूद कार्बनिक यौगिक का अपघटन होता है और यह वातावरण में उत्सर्जित होता है। दूसरा तरीका यह है कि किसान जैविक खाद को इस्तेमाल में लाएं। किसान जैविक खाद (organic fertilizer) का इस्तेमाल करते हुए कार्बनिक खेती को बढ़ावा दे सकते हैं। तीसरा तरीका यह है कि किसान मिश्रित खेती करें। उदाहरण के लिए मूंग और अरहर की खेती एक साथ करते हुए मिट्टी को उपजाऊ बनाया जा सकता है और मिट्टी में कार्बन उत्सर्जन को

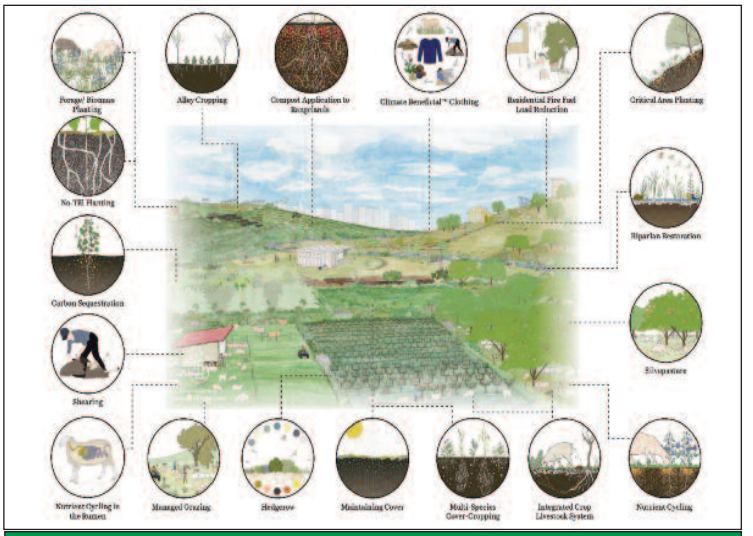

कार्बन खेती की प्रथाएँ

कार्बन खेती प्रथाएं प्रबंधन प्रथाएं हैं जो कार्बन को अलग करने औरध्या जीएचजी उत्सर्जन को कम करने के लिए जानी जाती हैं। इनमें से कम से कम पैंतीस प्रथाओं को प्राकृतिक संसाधन संरक्षण सेवा (एनआरसीएस) द्वारा संरक्षण प्रथाओं के रूप में पहचाना जाता है जो मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार करते हैं और महत्वपूर्ण सह-लाभ पैदा करते हुए कार्बन को अलग करते हैं, जिनमें शामिल हैंरू मिट्टी की जल धारण क्षमता में वृद्धि, जल विज्ञान कार्य, जैव विविधता, और लचीलापन।

भी बढ़ावा दिया जा सकता है। मूंग और अरहर दोनों मिट्टी में नाइट्रोजन की मात्रा को बढ़ाता है। जब मिट्टी की जुताई करें तो हरी मूंग की पत्तियां या अवशेष को मिट्टी में ही दबा दें। इससे मिट्टी में कार्बन पदार्थों की मात्रा में बढ़ोतरी होगी। इसके अलावा वन प्रबंधन जैसे वनों की कटाई को रोकना, स्थाई भूमि संरक्षण, वन रोपण, घास के मैदानों का संरक्षण करते हुए भी कार्बनिक खेती को बढ़ावा दिया जा सकता है।

भारतीय किसानों के लिए अवसर

कार्बन फार्मिंग के माध्यम से भारतीय किसान दुनिया को रास्ता दिखाने में सक्षम है। जलवायु परिवर्तन और ग्रीन हाउस गैस के उत्सर्जन को कम करने के लिए कार्बन फार्मिंग जहां बेहद महत्वपूर्ण है वहीं भारतीय किसानों के लिए यह एक बड़ा अवसर भी है। भारतीय किसान कार्बन खेती करते हुए बहुआयामी लाभ हासिल कर सकते हैं। दुनिया भर में कार्बनिक खेती से पैदा हुए उत्पादों की मांग बढ़ी है। लोग अब केमिकल युक्त खाने पीने की चीजों से बचना चाह रहे हैं। भारतीय किसान और सरकार कार्बनिक खेती से पैदा हुए उत्पादों की सही ब्रांडिंग करते हुए दुनिया भर में इसकी मांग तेजी से विकसित कर सकते हैं।

लाल भिंडी की खेती होती है अधिक कमाई

किसान बंधु भिंडी की खेती बहुत करते है और भिंडी की खेती से अधिक उत्पादन प्राप्त कर के अधिक कमाई भी करते है। इन में से भिंडी की उन्नत किस्म तो कई सारी है पर जो लाल किस्म की भिंडी आती है इन की खेती से किसान को अच्छी कमाई होती है। हरी भिंडी की खेती तो कई किसान भाई करते है पर लाल भिंडी की खेती बहुत कम किसान भाई करते है। और हरी भिंडी से अधिक पोषक तत्व लाल भिंडी की खेती में पाए जाते है। इस लिए हरी भिंडी से अधिक मांग लाल भिंडी की बाजार में रहती है यही अधिक मांग के कारण लाल भिंडी का भाव अधिक मिलता है और किसान को अच्छी कमाई करने के मौका मिल जाता है।

लाल भिंडी की खेती कब की जाती है?

लाल भिंडी की खेती साल में दो बार किसान करते है। एक ग्रीष्मकालीन ऋतु में जनवरी महीने से मार्च महीन तक और बारिश के दिनों में जून महीने से जुलाई महीने तक की जाती है। भिंडी की खेती से अधिक समय तक उत्पादन प्राप्त करना है तो आप भिंडी के बीज की बुवाई 7 दिन के अंतर में करें इन से उत्पादन कई दिनों तक चलता है।

लाल भिंडी की खेती के लिए मिट्टी, तापमान और जलवायु

लाल भिंडी की फसल की अच्छी विकास और अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए आप इन के उन्नत बीज की बुवाई बलुई दोमट मिट्टी में करें और मिट्टी के पीएच मान की बात करें तो 6.5 से लेकर 7.5 के बीच का अच्छा माना जाता है। और लाल भिंडी की खेती हमारे देश के अलग अलग राज्य में किसान करते है।लाल भिंडी की फसल को गर्म और आर्द्र जलवायु की जरूरत होती है। और लाल भिंडी की खेती में अधिक बारिश की भी जरूरत नहीं होती है इन की खेती में सामन्य बारिश से अधिक उत्पादन प्राप्त होता है। इन की खेती किसान खरीफ मौसम में और रबी मौसम के करते है। इन्हे अधिक गर्मी या अधिक सर्दी से नुकशान होता है। दिन में 5 से 6 घंटा धुप की जरूरत होती है।

लाल भिंडी की खेती में खेत तैयारी

लाल भिंडी की खेत तैयारी में आप दो से तीन बार गहरी जुताई करें। और एक हेक्तर के हिसाब से 15 से 17 क्विंटल अच्छे से सड़ी गोबर की खाद डाले बाद में रोटावेटर की मदद से इन खाद को अच्छे से मिट्टी में मिला दे और पट्टा चला के जमीन को समतल करें। बाद में आप इन के बीज की बुवाई आप कतार में करें ताकि इन के फिलियो की तुड़ाई और खरपतवार में कोई दिकत ना हो।

लाल भिंडी की उन्नत वैरायटी

लाल भिंडी की उन्नत वैरायटी आजाद कृष्णा और कशी लालिमा है यह दोनों भिंडी की उन्नत किस्म अच्छे उत्पादन के लिए जानी जाती है। हमारे देश भारत के कृषि वैज्ञानिकों ने इन दोनों भिंडी की उन्नत किस्म को उत्तरप्रदेश के वाराणसी स्थित भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान ने लाल भिंडी की इस किस्म को तैयार कर के विकसित की गई है। इन का रंग बैंगनी और लाल है।

भिंडी की फसल में खाद का इस्तेमाल

लाल भिंडी की खेती में आप खेत तैयारी के समय एक हैक्टर के हिसाब से 15 से 17 टन अच्छे से सड़ी गोबर की खाद डाले और मिट्टी में मिला देना है इन के बाद रासायनिक खाद में नाट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश एक एकड़ के हिसाब से 80, 60, 50 के दर से डालना है।

लाल भिंडी की खेती से उत्पादन और लाभ

लाल भिंडी की खेती में उत्पादन की बात करें तो यह आप की मिट्टी, जलवायु और फसल की देखभाल पर निर्भर है। फिर भी आप को बता दे की लाल भिंडी की खेती किसान ने एक एकड़ जमीन में की है तो 45 से लेकर 55 क्विंटल तक का उत्पादन प्राप्त होता है और इस लाल भिंडी में अधिक पोषक तत्व होते है इस लिए इन की बाजारी अधिक रहती है और हरी भिंडी से अधिक भाव मिल जाता है। इस लिए किसान को इन लाल भिंडी की खेती लाखों रूपए की कमाई होती है।

केले की खेती

डॉ. शशि कान्त ठाकुर (वैज्ञानिक)
केला अनुसंधान केन्द्र, गोरौल, वैशाली
डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि
विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर

केले की खेती भारत वर्ष में प्राचीन काल से होती आ रही है। यह मामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से एक बहुत ही महत्पूर्ण फल है। पौष्टिकता की दृष्टि में अन्य फलो की तुलना में कही अधिक महतापूर्ण है। इसका प्रयोग मांगलीक अवसरों पर भी बारे पैमाने पर किया जाता है। भारत वर्ष में आम के बाद केले की खेती दूसरे स्थान पर है। यह एक ऐसा पौधा है, जिसका मूल तना जमीन के अंदर, तथा मिथ्या तना जमीन के ऊपर होता है। जिसके बिच से होकर फूल निकलता है और बाहर निकलने पर एक और झुक जाता है। केले फल प्राय बीज रहित होता है, लेकिन कुछ किस्मों में बीज भी पाये जाते है। इसके बीज मटर के आकर के भूरे काले रंग के होते हैं। केले के 100 ग्राम गुद्दे से करीब 150 कैलोरी ऊर्जा प्राप्त होती है। पका केला विटामिन 'ए' का अच्छा स्रोत है। इसके आलावा 1.2 प्रतिशत प्रोटीन एवं प्रचुर मात्रा में खनिज तत्व पाये जाते है। केले की सबसे अधिक खेती केरल एवं गुजरात में होती है। बिहार में इसकी खेती वैशाली, समस्तीपुर, खगड़िया, मधेपुरा, कटिहार, पूर्णिया, एवं भागलपुर जिले में की जाती है। गृह आवशयकताओं की पूर्ति के लिए, गृह वाटिका या आँगनबाड़ी में भी सफलता पूर्वक लगाया जाता है। केले की सफल खेती एवं अच्छी फलोत्पादन के लिए किसानो को आधुनिक तकनीक एवं वैज्ञानिक पद्धति से खेती करने की जरुरत है।

जलवायु एवं मिटटी : केला उष्ण एवं आद्र जलवायु बाली पौधा है। जहां का तापमान 10 से 40 डिग्री से. ग्रे. तक रहता है। ठन्डे के मौसम में पौधे का विकाश एक जाता है। साथ ही साथ घाँद भी छोटा हो जाता है। केले के पौधे के समुचित विकाश के लिए वातावरण एवं भूमि दोनों में समुचित मात्रा में नमी होना चाहिए। प्रति माह 100 से 200 मी. मी. वर्षा की आवशयकता होती है। केला विभिन्य तरह के मिट्टी में उगाई जा सकती है। जिसका पी. एच. मान 5.5 से 7.0 तक हो, लेकिन उचित जल निकासी गहरी भुरभुरी, दोमट मिटटी अच्छी होती है।

उन्नत प्रभेद :
केले के विभिन्न किस्म है।

1. सब्जी वाली किस्म : बतीसा, बीउला, बनकेला, कचकेला, इत्यादि

2. सब्जी एवं फल दोनों के लिए किस्म कोठीया, मुट्ठीया, नेन्द्रन, आदि

3. पके रूप में लम्बी किस्म : अल्पान, चंपा, मालभोग, सकड़ चिनिया, कंथाली

4. बौनी किस्म : रोबस्टा, बसराई, सिंगापूर इत्यादि

इन किस्मो में अल्पान एवं कंथाली किस्म के पौधे में फलों की संख्या अधिक होती है। दूरस्थ जगहों में भेजने के दौरान इन किस्मों का बर्बादी भी अपेक्षाकृत कम होती है। इसका स्वाद भी अच्छी है।

प्रवंर्धन : केले का प्रवंर्धन मुख्य रूप से पुत्तलों के द्वारा होता है। पुत्तल दो प्रकार के होते है। एक तलवार नुमा नुकीली पत्ती वाली, जिसका निचला हिस्सा मोटा और ऊपर का हिस्सा पतला होता है। दूसरी चौड़ी पत्ती वाली जिसकी तने की मोटाई ऊपर से निचे तक लगभग एक सामान होती है। इनमे तलवार नुमा नुकीली पत्ती वाली पुत्तल ही खेतों में लगाने के लिए उत्तम होती है, क्योंकि इसकी बढ़वार तेज होती है। इसमें कम समय में घौद लगते है, तथा घौद की लम्बाई एवं इसमें फलों की संख्या अधिक होती है। ऐसे ही पुत्तल का चुनाव करें।

पौध रोपना : केले लगाने की दूरी विभिन्न किस्म पर निर्भर करती है। जैसे किस्म का चुनाव, केले की मौसम की अनुकूलता, मिट्टी की उर्वराशक्ति, देख–रेख, केले की बैग की अवधि इत्यादि। बौने किस्म को 1.5 से 2 मीटर पर, लम्बे किस्म 2.5 से 3 मीटर की दुरी पर लगाना

चाहिए। पौधे लगाने के लगाने के लिए। किस्म के अनुसार दूरी तय कर 50x50x50 से. मी. का गड्ढा खोद कर लगाना चाहिए। गड्ढे में 5 किलो सड़ी खाद, 1 किलो अंडी की खल्ली, 150 ग्राम नेत्रजन, 75 ग्राम फास्फेट एवं 150 ग्राम पोटाश एवं 20 ग्राम थाईमेट 10जी को डालकर भर देना चाहिए। जून–जुलाई माह में एक या दो वर्षा क बाद जब गड्ढे की मिटटी अच्छी तरह से बैठ जाय तो पुत्तल की रोपनी करें। रोपाई के बाद पुत्तल के चारों तरफ मिट्टी को अच्छी तरह दबा देना चाहिए ताकि हवा या सिचाई से पौधा न गिर सके।

खाद एवं उर्वरक : केले की सफल खेती के लिए खाद एवं उर्वरक का संतुलित मात्रा में व्यवहार लाभकारी होता है। अच्छी उपज के लिए प्रतिवर्ष 5 किलो गोबर की सड़ी खाद, 150 ग्राम नेत्रजन, 75 ग्राम फास्फेट एवं 150 ग्राम पोटाश प्रति पौधे को आवशयकता होती है। नेत्रजन की मात्रा को चार भागों में बाँट कर दें। इसके साथ ही 50 ग्राम बोरेक्स (सुहागा) एवं 150 ग्राम जिंक सल्फेट 10 दिनों के बाद दें एवं सिचाई अनुशंसित मात्रा में करते रहे। 50 ग्राम यूरिया 3, 6 एवं 9 महीने पर प्रति पौधे की दर से देना चाहिए। इसके अलावे सूक्ष्म पोषक तत्व की कमी होने पर बोरोन का एक ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव लाभकारी होता है। इससे घौद चमकीला, मोटा एवं चीत्ती रहित होता है। खाद व्यवहार पौधे के तने से 10–40 से. मी. दूरी पर दें।

पुत्तल निकलना देख–रेख एवं मिट्टी चढ़ाना : केले के एक ही थाले में कई पुत्तल निकल आते हैं। जिससे मुख्य पौधे का बढ़वार अबरुद्ध हो जाता है, एवं पौधे की लम्बाई एवं उससे फलों की संख्या कम हो जाती है। इसलिए एक थाले में मुख्य पौधे के आलावा एक भी पौधे/पुत्तल न रखे। अतरिक्त पौधे को समय समय पर निकालते रहना चाहिए। मिट्टी में नमी हमेशा रहनी चाहिए, इससे पौधे की वृद्धि अच्छी होती है। केले के फूल से जब फल बनना बंद हो जय तब उसे काट यानि फूल के सिरे को काट कर हटा देना चाहिए। वर्षा के बाद पौधे के चारों तरफ मिट्टी चढ़ाना चाहिए। क्योकि वर्षा के समय में केले की जड़ की मिट्टियाँ बह जाती है, जिससे जड़ों के समीप मिट्टी खाली हो जाती है। जिससे पौधे का सिरा भरी होकर या हवा से गिर जाता है।

निकाई–गुहाई एवं सिचाई : पौधे लगाने के उपरांत हल्की सिंचाई करें, मिट्टी में पौधे लगाने के 30 से 40 दिनों के भीतर पुत्तल में नई जड़ आ जाते है। इस अवधि में वर्षा न होने पर सिचाई करें। अधिक वर्षा होने पर खेती के पाने का उचित निकासी होना चाहिए । प्रत्येक सिचाई के उपरांत निकाई गुड़ाई करे। ऐसा करने से केला का बाग अच्छी तरह साफ–सुथरा रहता है। जिसका प्रभाव केले की फल एवं उत्पादन पर देखा जा सकता है।

अन्तरवर्ती फसलः पौधे की बीच की दूरी मुख्यतः लम्बी किस्म में अन्तरवर्ती फसल के लिए उपयोग किया जा सकता है। इन किस्मों में हल्दी, अरवी की खेती की जा सकती है। क्योंकि इन फसलों को कुछ छाया दार जगहों पर भी आसानी से उगाया जा सकता है। केले के घौद का भार अधिक होने पर झुक जाते है। अतः ऐसे पौधों को सहारा देने की आवशयकता होती है। सहारा के लिए बांस की लकड़ी को कैंचीनुमा बनाकर व्यवहार किया जा सकता है।

उपज : बौने किस्म को लगाने के करीब 12 से 15 महीने बाद घौद पूर्णरूप से तोड़ने के लिए तैयार हो जाता है। केले का फल जब तीन चौथाई परिपक्व हो जाय तब घौद को काट लेना चाहिए। इस प्रकार के केले को दूरस्थ बाजार में भेजा जा सकता है, इसमें पकने की अवधि बढ़ जाती है। केले की उपज कई बातों पर निर्भर करती है। जैसे किस्म, लगाने की दूरी, मिट्टी की उर्वराशक्ति, बाग का प्रबंधन इत्यादि। लम्बी किस्म की औसत उपज 30–40 टन प्रति हेक्टेयर तथा बौनी किस्म की औसत उपज 60–80 टन प्रति हेक्टयर होती है।

कीट–रोग एवं निदान

1. तना छेदक : यह कीट तने में छेद कर अंदर प्रवेश करती है, एवं भीतरी भाग को खाती है। इस कारण केले के पौधे के भीतरी पौस्टिक तत्व का संचालन बंद हो जाता है, जिससे पौधे की वृद्धि रुक जाती है और फूल भी नहीं बन पाती है। इस किट का आक्रमण प्रायः जुलाई से अक्टूबर माह तक अधिक होता है। केले के पुत्तल (शक्कर) को रोपने से पहले क्लोरपाइरिफॉस दवा का 0.5 मी. ली. प्रति लीटर पानी में घोल कर 45 मिनट तक डूबों कर रोपना चाहिए। इसके आलावे इस दवा के घोल का इतना ही मात्रा का घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

2. लाही : लाही कीट केले की फसल को अप्रत्यक्ष रूप से क्षति पहुँचती है। यह कीट 'विषाणु' रोग का बाहक है। इससे केला में 'बंचि टॉप' नमक रोग होता है। अप्रैल से जुलाई माह तक इस कीट का प्रकोप सबसे से अधिक होता है। इस कीट से बचाव हेतु मालाथिऑन या मेटासिस्टोक्स दवाईयों में किसी एक से 0.5 मी. ली. प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें।

3. फल एवं पत्र चित्रिकारक कीट : यह कीट अपने नाम के अनुसार कोमल पत्ती एवं फल के रस को चूस कर पत्ती एवं फल पर चित्तीदार धब्बे बना देता है जिससे फल की वृद्धि ठीक तरह से नहीं हो पाती है एवं इसका कीमत भी बाजार में नहीं मिल पता हैं। बरसात में इस कीट का आक्रमण अधिक होता है। इसके नियंत्रण हेतु कार्बारील मोनोक्रोटोफास या मालाथियाँन दवा में से किसी एक का 0.5 मी. ली. प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें साथ ही केला के बाग को साफ रखे।

4. जड़ छेदक : यह कीट केला के पौधों के जड़ को छेद कर क्षति पहुँचाती है। अधिक आक्रमण की स्थिती में पेड़ सुख कर गिर जाता है। इसके आक्रमण के कारण जड़ पर काले रंग का पदार्थ दिखाई देने लगता है। केला लगाने के पहले कलोरपाईरीफॉस दवा का 0.5 मी. ली. प्रति लीटर पानी में घोल कर 45 मिनट तक जड़ डूबोकर रोपना चाहिए एवं इसी दवा का छिड़काव भी करना चाहिए। कार्बोफ्यूरॉन 3जी या फोरेट 10जी दानेदार दवा का 30 ग्राम प्रति पौधे के हिसाब से जड़ के करीब डाले।

रोग

1. पनामा विल्ट/उखड़ा रोग : यह कवक जननित रोग है। इसके जीवाणु मिट्टी में रहते है जो जड़ों या चोट खाए प्रकन्द में घुस कर पौधों को प्रभावित करते है। आक्रान्त पौधों की पत्तियों पीली हो कर निचे झुकने लगती है और बाद में एक एक करके सूखने लगती है। अधिक आक्रमण के स्थिति में तना फट जाता है और पौधा मर जाता है। इससे बचाव हेतु कार्बेन्डाजिम (1 ग्राम प्रति ली. पानी) के जलीय घोल में सकर को 30–40 मिनट डूबाकर पौधे की रोपाई करे। रोपने के 5 महीने बाद हर दूसरे महीने में उपयुक्त जलीय घोल से गहरी छिड़काव करें।

2. पूर्ण चित्ती / पत्र गुच्छन (बंचि टॉप) यह विषाणु जनित रोग है। इसके आक्रमण से पौधे के पत्ते छोटी–छोटी पत्तियाँ (जिसमे पिली धारियाँ होती है) जमा होकर गुच्छे का रूप धारण कर लेती है। आक्रांत पौधे का विकास रुक जाता है और फलन होती है पर व्यर्थ हो जाती है इसके नियंत्रण हेतु कार्बेन्डाजिम या थायोफिनेट मिथाईल (1.5 ग्राम प्रति ली. पानी में) के घोल को बरसात के दिनों में छिड़काव करें। अधिक प्रकोप होने पर फसल चक्र अपनाने एवं कुछ दिनों तक ऐसी खेतो में केला नहीं लगावे द्य इसके अलावे प्रकन्द सड़न रोग एवं विगलन रोग होता है। प्रकन्द सड़न रोग नियंत्रण हेतु स्टेप्टोसाइक्लीन (0.025 प्रतिशत) कार्बेन्डाजिम (0.1 प्रतिशत) के जलीय घोल से छिड़काव करें। विगलन रोग के नियंत्रण हेतु कॉपर आक्सीक्लोराइड (0.3 प्रतिशत) घोल का छिड़काव करें।

भौगोलिक उपदर्शन रजिस्ट्री

Geographical Indication Registry

प्ररूप O-2 FORM O-2

बौद्धिक सम्पदा भारत INTELLECTUAL PROPERTY INDIA

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA

भौगोलिक उपदर्शन रजिस्ट्री
Geographical Indication Registry

वस्तुओं का भौगोलिक उपदर्शन (रजिस्ट्रीकरण तथा संरक्षण) अधिनियम, 1999
Geographical Indication of goods (Registration and Protection) Act, 1999

Certificate of Registration of Geographical Indication under section 16 (1) or of authorised user under section 17(3)(c)

भौगोलिक उपदर्शन संख्या:
Geographical Indication No.: 554 CERTIFICATE NO. 313

प्राधिकृत उपयोक्ता संख्या
Authorised user No.:

दिनांक
Date: 20.06.2016

प्रमाणित किया जाता है कि भौगोलिक उपदर्शन (जिसकी समाकृति इसके साथ उपाबद्ध है) / प्राधिकृत उपयोक्ता

के नाम से वर्ग में संख्या के अधीन दिनांक को

के लिए रजिस्टर में रजिस्ट्रीकृत किया गया है।

Certified that the Geographical Indication (of which a representation is annexed hereto)/ authorised user has been registered in the register in the name of Magahi Paan Utpadak Kalyan Samiti, Village: Deuri, Post Office: Barhauna, District: Nawada – 805103, Bihar, India.
Facilitated by: Bihar Agricultural University.

in class 31 under no. 554 as of the date 20.06.2016
in respect of "Magahi Paan" Falling in Class – 31 – in respect of – Horticultural – Betel vine

आज दिनांक माह 20 को चेन्नई में मेरे निदेश पर मुद्रांकित किया गया।
Sealed at my direction this 18th day of May 2018 at Chennai.

रजिस्ट्रार, भौगोलिक उपदर्शन
Registrar of Geographical Indication.

प्ररूप O-2 FORM O-2

बौद्धिक सम्पदा भारत INTELLECTUAL PROPERTY INDIA

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA

भौगोलिक उपदर्शन रजिस्ट्री
Geographical Indication Registry

वस्तुओं का भौगोलिक उपदर्शन (रजिस्ट्रीकरण तथा संरक्षण) अधिनियम, 1999
Geographical Indication of goods (Registration and Protection) Act, 1999

Certificate of Registration of Geographical Indication under section 16 (1) or of authorised user under section 17(3)(c)

भौगोलिक उपदर्शन संख्या:
Geographical Indication No.: 552 CERTIFICATE NO. 326

प्राधिकृत उपयोक्ता संख्या
Authorised user No.:

दिनांक
Date: 20.06.2016

प्रमाणित किया जाता है कि भौगोलिक उपदर्शन (जिसकी समाकृति इसके साथ उपाबद्ध है) / प्राधिकृत उपयोक्ता

के नाम से वर्ग में संख्या के अधीन दिनांक को

के लिए रजिस्टर में रजिस्ट्रीकृत किया गया है।

Certified that the Geographical Indication (of which a representation is annexed hereto)/ authorised user has been registered in the register in the name of Litchi Growers Association of Bihar, Adarsh Nagar, Lane No: 3, Post Office: Dumari, District: Muzaffarpur – 843 113, Bihar, India.
Facilitated by: Bihar Agricultural University, Sabour, Bhagalpur-813210, Bihar, India.

in class 31 under no. 552 as of the date 20.06.2016
in respect of "Shahi Litchi of Bihar" Falling in Class – 31 – Horticulture Products (Fruits) – Litchi

आज दिनांक माह 20 को चेन्नई में मेरे निदेश पर मुद्रांकित किया गया।
Sealed at my direction this 05th day of October 2018 at Chennai.

रजिस्ट्रार, भौगोलिक उपदर्शन
Registrar of Geographical Indication.

प्ररूप O-2 FORM O-2

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA

भौगोलिक उपदर्शन रजिस्ट्री
Geographical Indication Registry

Geographical Indication of Goods (Registration and Protection) Act, 1999

Geographical Indication No.: 696 CERTIFICATE NO. 421

Date: 14.08.2020

in class 29 under no. 696 as of the date 14.08.2020
in respect of MITHILA MAKHANA Falling in Class - 29 - in respect of - Makhana

Sealed at my direction this 10th day of August 2022 at Chennai.

रजिस्ट्रार, भौगोलिक उपदर्शन
Registrar of Geographical Indication.

प्ररूप O-2 FORM O-2

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA

भौगोलिक उपदर्शन रजिस्ट्री
Geographical Indication Registry

Geographical Indication of goods (Registration and Protection) Act, 1999

Geographical Indication No.: 551

Date: 20.06.2016

in class 31 under no. 551 as of the date 20.06.2016
in respect of "Bhagalpuri Zardalu" Falling in Class – 31 – in respect of – Horticulture Products (Fruits) – Mango

रजिस्ट्रार, भौगोलिक उपदर्शन
Registrar of Geographical Indication.

प्ररूप O-2 FORM O-2

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA

भौगोलिक उपदर्शन रजिस्ट्री
Geographical Indication Registry

Geographical Indication of goods (Registration and Protection) Act, 1999

Geographical Indication No.: 553

Date: 20.06.2016

in class 30 under no. 553 as of the date 20.06.2016
in respect of "Katarni Rice"

Facilitated by: Bihar Agricultural University.

रजिस्ट्रार, भौगोलिक उपदर्शन
Registrar of Geographical Indication.

www. bausabour.com www. youtube.com/bausabour.com +91-7004528893 Kisan Help Line : 1800 3456 455 (Tollfree)

बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित कतरनी धान के उन्नत प्रभेद

भागलपुर कतरनी धान

परिस्थिति	: मध्यम सिंचित जमीन
बीज दर	: 15 कि०ग्रा०/हे0 (सामान्य रोपनी हेतु)
बुआई समय	: 15–25 जुलाई
रोपनी	: बीचड़ा रोपने की उम्र : 20–22 दिन
प्रति खूँटी बिचड़ा	: 1–2
रोपाई की दूरी	: कतार से कतार : 20 से०मी०
पौधा से पौधा	: 20 से०मी०
परिपक्वता अवधि	: 150–155 दिन
उपज क्षमता	: 28–30 क्विंटल/हे0
विशेष गुण	: सुगंधित धान

बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर

मौसम के अनुकूल कृषि तकनीक

जलवायु के अनुकूल कृषि तकनीक के अंतर्गत किसानों को मौसम के अनुकूल फसलों की बुआई और कटाई तथा वैज्ञानिक तरीके से खेती करना सिखाई जाती है। मौसम के अनुकूल खेती से तीनों मौसमों में खेती होगी, जिससे कृषि उत्पादकता बढ़ेगा और किसानों की आय बढ़ेगी।

जलवायु के अनुकूल कृषि तकनीक की महत्पूर्ण बातें:

- फसल की उत्पादन लागत में कमी।
- किसानों की लागत में कमी
- प्रति क्षेत्रफल अधिक लाभ, जलवायु के अनुकूल कृषि तकनीक के कार्यान्वयन के लिए कृषि विभाग द्वारा सभी जिलों के 5–5 गांवो का चयन

मौसम के अनुकूल कृषि तकनीक:

- फसल कैलेंडर के अनुसार फसलों की समय पर बुवाई।
- जलवायु अनुकूल किस्म/प्रभेद जो फसल प्रणाली और बीज के गुणवत्ता के अनुरूप हो।
- उत्तम बुवाई तकनीक जैसे जीरो टिलेज, हैप्पी सीडर, रेज्ड बेड, सीधी बुवाई, ड्रम सीडिंग, पंक्ति में बुवाई आदि।
- जल, पोषक तत्व एवं खरपतवार आदि का समुचित प्रबंधन।
- मिट्टी और जलवायु के परिस्थितियों के अनुरूप फसल विविधीकरण।
- हैप्पी सीडर, सुपर सीडर, स्ट्रॉ बेलर के माध्यम से फसलों अवशेषों का प्रबंधन।
- किसानों के लिए प्रशिक्षण एवं परिभ्रमण।

www.bausabour.com www.youtube.com/bausabour +91 7004528893

Kisan Help Line: 1800 3456 455 (Tollfree)

बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर (भागलपुर)
विश्वविद्यालय द्वारा विकसित धान के प्रभेद

सबौर दीप
पारिस्थितिकी : सिंचित मध्यम– ऊपरी जमीन के लिए
बुआई का समय : 25 जून से 10 जुलाई
परिपक्वता अवधि : 110–115 दिन
औसत उपज : 35–40 क्विं/हे.
विशेष गुण : अल्पावधि प्रभेद, पतला एवं लंबा चावल

सबौर श्री
पारिस्थितिकी : वर्षा आधारित मध्यम– निचली जमीन के लिए
बुआई का समय : 25 मई से 10 जून
परिपक्वता अवधि : 140–145 दिन
औसत उपज : 50–55 क्विं/हे.
विशेष गुण : मध्यम आकार का चावल

सबौर सुरभित
पारिस्थितिकी : सिंचित मध्यम जमीन के लिए
बुआई का समय : 10–15 जून
परिपक्वता अवधि : 120–125 दिन
औसत उपज : 35–40 क्विं./हे.
विशेष गुण : अत्यंत महीन एवं सुगंधित चावल

भागलपुर कतरनी
पारिस्थितिकी : सिंचित मध्यम जमीन के लिए
बुआई का समय : 15–25 जुलाई
परिपक्वता अवधि : 150–155 दिन
औसत उपज : 28–30 क्विं. /हे.
विशेष गुण : मध्यम पतला एवं सुगंधित चावल, प्रकाशावधि संवेदनशील प्रभेद

सबौर हर्षित धान
पारिस्थितिकी : सूखा जलवायु के लिए उपयुक्त
बुआई का समय : 10–25 जून
परिपक्वता अवधि : 120–125 दिन
औसत उपज : 40–45 क्विं/हे.
विशेष गुण : मध्यम पतला चावल, सुखाइ सहने की क्षमता

सबौर सम्पन्न धान
पारिस्थितिकी : सूखा जलवायु एवं बाढ़ से प्रभावित क्षेत्रों के लिए उपयुक्त
बुआई का समय : 25 मई से 10 जून
परिपक्वता अवधि : 150–155 दिन
औसत उपज : सामान्य परिस्थिति– 55–60 क्विं/हे. (बाढ़ या सुखाड़ की स्थिति में 25–30 क्विं/हे.)
विशेष गुण : अत्यंत महीन एवं सुगंधित चावल

सबौर अर्द्धजल
पारिस्थितिकी : मध्यम एवं ऊपरी जमीन के लिए उपयुक्त
बुआई का समय : 10–15 जून
परिपक्वता अवधि : 120–125 दिन
औसत उपज : 40–45 क्विं./हे.
विशेष गुण : सीधी बुआई एवं कम पानी में भी अच्छी उपज

सबौर सोना धान
पारिस्थितिकी : मध्यम एवं गहरी जमीन के लिए
बुआई का समय : 15 से 30 जून
परिपक्वता की अवधि : 145 से 155 दिन
औसत उपज : 50 से 60 क्विं./हे.
विशेष गुण : छोटा पतला दाना

सबौर हीरा धान
पारिस्थितिकी : मध्यम एवं गहरी जमीन के लिए उपयुक्त
बुआई का समय : 25 मई से 10 जून
परिपक्वता अवधि : 145–155 दिन
औसत उपज : 65–70 क्विं0ध्हे
विशेष गुण : मध्यम मोटा दाना

सबौर मोती धान
पारिस्थितिकी : सिंचित माध्यम जमीन के लिए
बुआई का समय : 15 से 30 जून
परिपक्वता की अवधि : 115 से 120 दिन
औसत उपज : 52 से 58 क्विं./ हे.
विशेष गुण : लंबा पतला दाना

कृषि अनुसंधान संस्थान, पटना

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित

धान के उन्नत प्रभेद

भागलपुर कतरनी

पारिस्थितिकी	सिंचित मध्यम भूमि के लिये उपयुक्त
बोने का समय	15 जुलाई से 25 जुलाई
पंक्ति से पंक्ति की दूरी	20 से0मी0
पौध से पौध की दूरी	15 से0मी0
बीज दर	20 कि0ग्रा0/हे0
परिपक्वता की अवधि	150 से 155 दिन
उपज क्षमता	28 से 30 क्विं0/हे0
विशेष गुण	मध्यम पतला, अति सुगंधित चावल, प्रकाश संवेदनशील

सबौर हर्षित

पारिस्थितिकी	कम वर्षा वाले क्षेत्र के लिये उपयुक्त
बोने का समय	10 जून से 25 जून
पंक्ति से पंक्ति की दूरी	20 से0मी0
पौध से पौध की दूरी	15 से0मी0
बीज दर	25–30 कि0ग्रा0/हे0
परिपक्वता की अवधि	120 से 125 दिन
उपज क्षमता	40 से 45 क्विं0/हे0
विशेष गुण	पुष्पण के समय सूखा सहिष्णु, सुगंधित मध्यम पतला दाना

www. bausabour.com www. youtube.com/bausabour.com +91-7004528893 Kisan Help Line : 1800 3456 455 (Tollfree)

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित

धान के उन्नत प्रभेद

सबौर सोना धान
BRR-2177

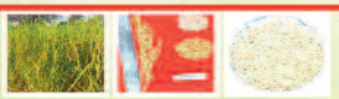

पारिस्थितिकी	सिंचित, ऊपरी भमि तथा सीधी बुआई के लिए उपयुक्त
बोने का समय	15 जून से 30 जून
पंक्ति से पंक्ति की दूरी	20 से0मी0
पौध से पौध की दूरी	20 से0मी0
बीज दर	12–15 कि0ग्रा0/हे0
परिपक्वता की अवधि	130 से 135 दिन
उपज क्षमता	92.2 क्विं0/हे0 (औसत उपजः 52 से 58 क्विं0/हे0)
विशेष गुण	छोटा पतला दाना, अत्यंत सुगंधित एवं कोमल चावल, रोग एवं कीट के प्रति मध्यम प्रतिरोधी, मजबूत तना, सीधी बुवाई में भी अत्यधिक उपज देने वाली प्रभेद।

सबौर हीरा धान
BRR-2110

पारिस्थितिकी	वर्षा आश्रित निचली एवं सिंचित भूमि तथा सीधी बुआई के लिए उपयुक्त
बोने का समय	01 जून से 15 जून
पंक्ति से पंक्ति की दूरी	20 से0मी0
पौध से पौध की दूरी	20 से0मी0
बीज दर	15–20 कि0ग्रा0/हे0
परिपक्वता की अवधि	145 से 155 दिन
उपज क्षमता	104.6 क्विं0/हे0 (औसत उपजः 65 से 75 क्विं0/हे0)
विशेष गुण	मध्यम छोटा दाना, कोमल चावल, अधिक उपज देने वाली, सूखा एवं जल जमाव (10 दिनों तक) अवरोधी, रोग एवं कीट के प्रति सहिष्णु,मजबूत तना,सीधी बुवाई के लिये उपयुक्त

सबौर मोती धान
BRR-2107

पारिस्थितिकी	वर्षा आश्रित ऊपरी एवं सिंचित भूमि तथा सीधी बुआई के लिये उपयुक्त।
बोने का समय	15 जून से 30 जून
पंक्ति से पंक्ति की दूरी	20 से0मी0
पौध से पौध की दूरी	20 से0मी0
बीज दर	15–20 कि0ग्रा0/हे0
परिपक्वता की अवधि	115 से 120 दिन
उपज क्षमता	87.5 क्विं0/हे0 (औसत उपजः 52 से 55 क्विं0/हे0)
विशेष गुण	कोमल पतला लम्बा चावल, फुदका कीट, झोंका रोग, जीवाणु झुलसा रोग, शीथ ब्लाइट के प्रति सहिष्णु, मजबूत तना, सीधी बुआई के लिये उपयुक्त।

सबौर कुँवर धान
BRR-2176

पारिस्थितिकी	सिंचित भूमि तथा सीधी बुआई के लिए उपयुक्त।
बोने का समय	15 जून से 30 जून
पंक्ति से पंक्ति की दूरी	20 से0मी0
पौध से पौध की दूरी	20 से0मी0
बीज दर	12–15 कि0ग्रा0/हे0
परिपक्वता की अवधि	115 से 120 दिन
उपज क्षमता	89.8 क्विं0/हे0 (औसत उपजः 55 से 60 क्विं0/हे0)
विशेष गुण	कोमल छोटा पतला चावल, अल्प अवधि में अधिक उपज देने वाली, रोग एवं कीट के प्रति सहिष्णु, मजबूत तना, सीधी बुवाई में भी अत्यधिक उपज देने वाली प्रभेद।

सबौर मंसूरी धान
BRR-2141

पारिस्थितिकी	सिंचित भूमि तथा सीधी बुआई के लिए उपयुक्त
बोने का समय	10 जून से 30 जून
पंक्ति से पंक्ति की दूरी	20 से0मी0
पौध से पौध की दूरी	25 से0मी0
बीज दर	15–20 कि0ग्रा0/हे0
परिपक्वता की अवधि	135 से 145 दिन
उपज क्षमता	122.4 क्विं0/हे0 (औसत उपजः 65 से 75 क्विं0/हे0)
विशेष गुण	मध्यम छोटा दाना, कोमल चावल, रोग एवं कीट के प्रति सहिष्णु, मजबूत तना, मध्यम अवधि एवं सीधी बुवाई मे भी अत्यधिक उपज देने वाली प्रभेद।

www. bausabour.com www. youtube.com/bausabour.com +91-7004528893 Kisan Help Line : 1800 3456 455 (Tollfree)

BIHAR AGRICULTURAL UNIVERSITY, SABOUR
बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर
फसलों में पोषक तत्वों की कमी के लक्षण
B
बोरॉन
वर्धनशील भाग के पास की पत्तियों का पीला होना, आकार में छोटा होना एवं सूखने लगना, कलियों का सफेद व हल्के भूरे मृत ऊतक की तरह दिखना, फलों का फटना एवं गिरना, बढ़वार रूक जाना, पैदावार कम हो जाना आदि।
Ca
कैल्शियम
ऊपर की पत्तियों का मुड़ी हुई, झुर्रीदार तथा किनारे से मुरझाया दिखाई पड़ना, शीर्ष पत्तियों का देर से निकलना, अविकसित फूलों/कलियों का सूखना व झड़ना।
S
गंधक
नई पत्तियों का हल्का हरा या पीला होना, प्रभावित पत्तियों का बाद में सफेद हो जाना, पतियाँ कड़ी होना, जड़ तथा तना लम्बा व पतला होकर सख्त होना, पौधे का विकास धीमा पड़ जाना।
Fe
लोहा
नयी पत्तियों की शिराओं के बीच पीलापन आना, अधिक कमी होने पर पत्तियों का रंग हल्का सफेद पड़ना और सूख जाना।
Mn
मैंगनीज
नई पतियों का रंग पीला–धूसर या लाल–धूसर हो जाना, बाद में पत्तियों पर मृत ऊतक के धब्बे दिखाई देना।
Cu
ताम्बा
नयी पतियों का कोमल, लचीली और हरितिमाहीन होकर पीछे की ओर जीभिका तक मुड़कर लटक जाना, नई शाखाओं का ऊपरी भाग सूखना, बाद में आने वाली पतियों का बिना खिले ही पीला पड़कर सूख जाना।
Zn
जस्ता
पत्तियों की शिराओं के मध्य हरितिमाहीन, पीला धब्बा जिसका बाद में भूरे/कत्थई रंग में परिवर्तित होना, पत्तियों का आकार छोटा, अवरूद्ध वृद्धि, दो गाँठों के बीच की दूरी कम होने से रसेट का आकार, उपज में कमी का होना।
Mo
मॉलिब्डेनम
कमी के लक्षण का पुरानी पत्तियों से प्रारंभ होकर अग्र सिरे की ओर बढ़ना, पत्तियों का हल्के हरे रंग का होना, मुड़कर प्याले के आकार का हो जाना, बाद में सूख जाना, फूल–फल एवं दाना कम लगना, सिकुड़ना, देर से पकना आदि।
Mg
मैग्नीशियम
पुरानी पत्तियों में हरे रंग की कमी, पत्तियाँ आकार में छोटी, ऊपर की ओर मुड़ी हुई, शिराओं के बीच के भाग में पीलापन, कमजोर टहनियाँ।
K
पोटैशियम
पुरानी पत्तियों का पीला/भूरा हो जाना, पत्तियों का बाहरी किनारा कट–फट जाना एवं जला हुआ/मुरझाया हुआ प्रतीत होना, पत्तियों का गिरना, तना कमजोर हो जाना, पौधों की धीमी वृद्धि, दाने सिकुड़े हुए।
P
फस्फोरस
पुरानी पत्तियों, तनों व शाखओं का रंग जामुनी पड़ना, पत्तियों का छोटा रह जाना, जड़ों एवं पौधों का कम बढ़वार एवं फसल देर से पकना।
N
नाइट्रोजन
पुरानी पत्तियों का पहले पीला होना, पौधों की बढ़वार में रूकावट, कल्लों की संख्या कम, अधिक कमी की दशा में पूरा पौधा पीला पड़ जाना, उपज व फसल गुणवत्ता खासकर प्रोटीन में कमी।
www. bausabour.com www. youtube.com/bausabour.com +91-7004528893 Kisan Help Line : 1800 3456 455 (Tollfree)

सब्जी बीज बुवाई की वार्षिक कृषि कार्य योजना

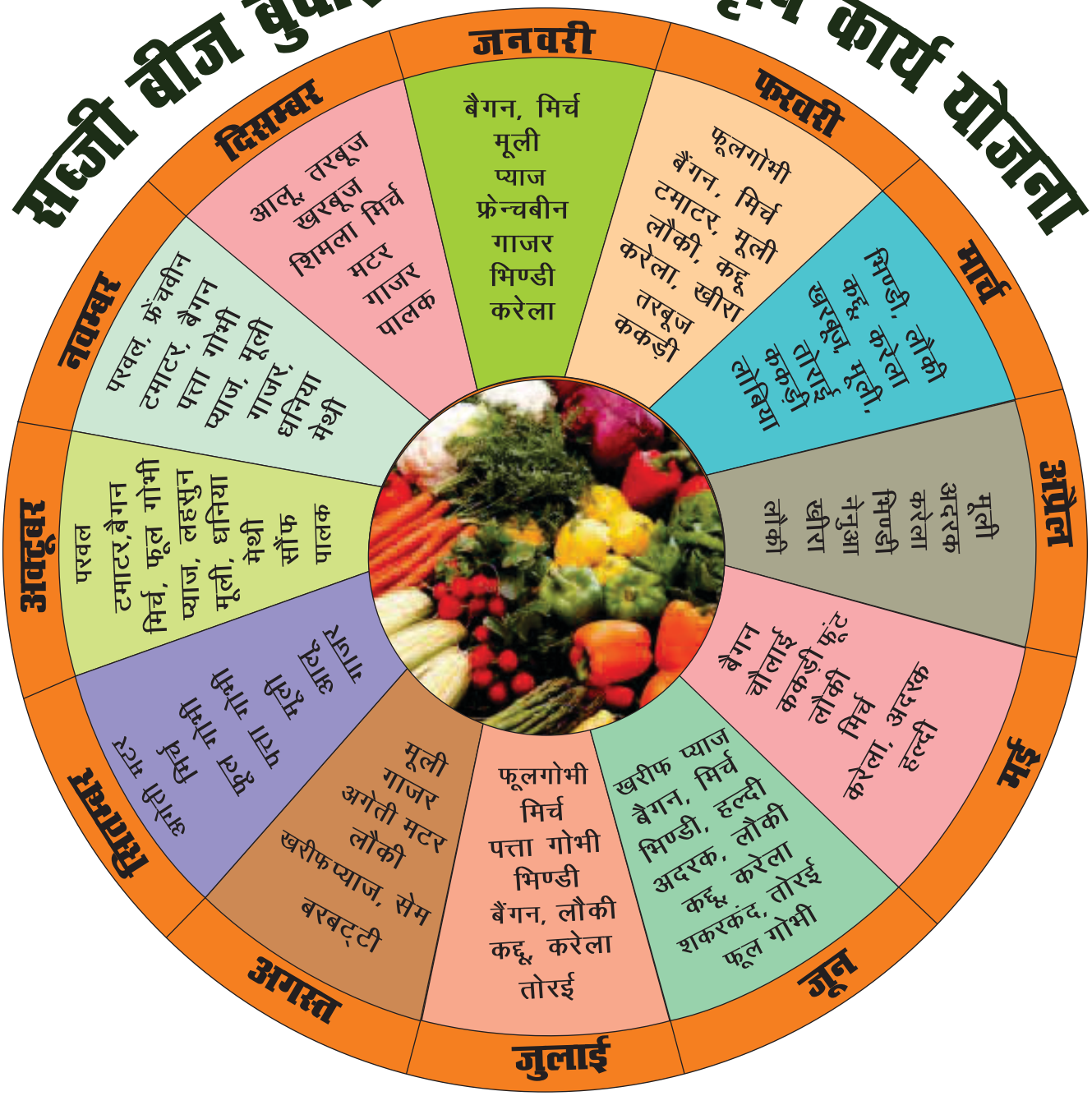

प्रकाशन
बिहार कृषि प्रबंधन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान (बामेती)
पोस्ट : जगदेव पथ, फुलवारीशरीफ मार्ग, महिला पॉलेटेक्निक के सामने, पटना-800 014
Website: www.bameti.org, e-mail : bameti.bihar@gmail.com